• वर्ष : 05 • अंक : 05 • अक्टूबर 2026 • हिन्दी मासिक पत्रिका ₹ 40/-

RNI : CHHHIN 2022/86325

स्वतंत्र बोल

www.swatantrabol.com



BJP संगठन में सर्जरी पवन साय की विदाई..

केदार- शांति कश्यप जमीन से कंपनियों तक विवाद..

छत्तीसगढ़ शासन



श्री विष्णु देव साय
माननीय मुख्यमंत्री, छत्तीसगढ़

श्री नरेन्द्र मोदी
माननीय प्रधानमंत्री

छत्तीसगढ़ में उद्योग स्थापना की प्रक्रिया है बेहद आसान

सिंगल विंडो 2.0

सरल, तेज और पारदर्शी

उद्योग स्थापना से जुड़ी
150+ सेवाएं
और सभी आवश्यक
अप्रूवल

सिर्फ एक क्लिक पर...

अधिक जानकारी
के लिए
क्यूआर कोड
स्कैन करें

सिंगल विंडो 2.0 के फायदे

- समयबद्ध निपटान
- पूरी प्रक्रिया डिजिटल
- रियल टाइम ट्रैकिंग और अपडेट
- एक ही प्लेटफॉर्म पर सभी सेवाएं

- उद्योगों के लिए अनेक सरकारी प्रोत्साहन
- कम समय कम प्रयास
- सुरक्षित और विश्वसनीय
- सरकार आपके साथ हर कदम पर

नया छत्तीसगढ़, नए अवसर, नई उड़ान

Visit us : ChhattisgarhCMO ChhattisgarhCMO ChhattisgarhCMO ChhattisgarhCMO DPRChhattisgarh DPRChhattisgarh www.dprcg.gov.in

RNI : CHHHIN 2022/86325

स्वतंत्र बोल

www.swatantrabol.com

वर्ष : 05 अंक : 05 अक्टूबर 2026

प्रेरणास्त्रोत
स्व. जीवन गिरि गोस्वामी

संपादक
राहुल गिरि गोस्वामी

कानूनी सलाहकार
आनंद मोहन तिवारी
दिनेश मिश्रा

प्रचार-प्रसार-विज्ञापन
शेखर सागर

ले-आउट/डिजाइन
द्वारिका प्रसाद साहू

स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक
राहुल गिरि गोस्वामी द्वारा
डी-317 बैंक ऑफ बड़ौदा के सामने
टैगोर नगर, रायपुर (छ.ग.)
पिन-492001 से प्रकाशित
एवं गुप्ता ऑफसेट समता कॉलोनी रायपुर
(छ.ग.) पिन-492001 से मुद्रित।
संपादक - राहुल गिरि गोस्वामी

रजिस्टर्ड कार्यालय
डी-317 बैंक ऑफ बड़ौदा के सामने
टैगोर नगर, रायपुर (छ.ग.)
पिन-492001
Email : Bolswatantra@gmail.com
Phone : 9754374333

(समस्त न्यायालीन प्रकरणों के
निपटारे के लिए न्याय क्षेत्र रायपुर होगा।)

स्मृति ईरानी प्रभारी तो कर्मवीर.. 03



मंत्री केदार कश्यप और पत्नी शांति कश्यप.. 06



पेपर लीक, गिरफ्तारी और विवादित.. 10

विकास निधि खर्च करने में बृजमोहन.. 13

फांसी की सजा के बाद भी क्यों जुटाया जा.. 16



विष्णु भैया के नेतृत्व में संवरता छत्तीसगढ़.. 18

अधिकारी, नेता, सुरक्षाकर्मी और उद्योगपति.. 20

25 साल जिसने मोदी के साथ सियासत को बदला 23



कार्यकर्ताओं के मन की बात समझना जरूरी..

छत्तीसगढ़ में बीजेपी ने फेरबदल कर चौका दिया। वर्षो से जमे छत्रपों को बीजेपी ने एक झटके में किनारे कर कार्यकर्ताओ को बड़ा मैसेज दिया है। इस फेरबदल से कार्यकर्ताओ में उत्साह है और खुशी इतनी कि कुछ जगहों पर मिठाई बांटने की खबरे आई। अगर आपका झंडा उठाने वाला, रैलियों में नारा लगाने वाला कार्यकर्ता महत्वपूर्ण व्यक्ति की विदाई से खुश हो रहा है तो पार्टी के जिम्मेदारों को यह समझ जाना चाहिए कि नाराजगी किस स्तर तक घर कर चुकी है। बीजेपी के इस फेरबदल से कार्यकर्ताओ में उत्साह के साथ कुछ उम्मीदें भी जगी है, समय रहते उन्हें समझ लिया जाए तो सरकार और संगठन के लिए बेहतर हो सकता है। दूसरी तरफ कार्यकर्ताओ में मंत्रियो की कार्यशैली को लेकर नाराजगी है उसे समय रहते दूर करना होगा। अधिकांश मंत्रियो ने कमीशनखोरी और भ्रष्टाचार को ही शिष्टाचार बना रखा है और शायद उन्होंने यह मान लिया की दोबारा उन्हें मौका नहीं मिलेगा.. ऐसे में जी भर कर गंध मचा दो। जमीनी स्तर के कार्यकर्ताओ की नाराजगी कमीशनखोरी के साथ प्रशासनिक लूट और भर्राशाही से है। बीजेपी कार्यकर्ताओ को प्रदेश प्रभारी, संगठन मंत्री से बहुत उम्मीदे होगी है, आने वाले दिनों में स्पष्ट होगा, कि उनकी उम्मींदे कितनी पूरी हुई। बीजेपी कार्यकर्ताओं द्वारा प्रधानमंत्री के मन की बात को गंभीरता से सुना जाता है, अब जरूरी है कि कार्यकर्ताओं के मन की बात को भी सुना जाए।

– राहुल गोस्वामी

छत्तीसगढ़ बीजेपी में बड़ा फेरबदल

स्मृति ईरानी प्रभारी तो कर्मवीर को संगठन की जिम्मेदारी.. अजय जामवाल और पवन साय की विदाई



स्वतंत्र बोल डेस्क

बीजेपी ने लंबे समय बाद संगठन में बड़ा फेरबदल किया। एक साथ देशभर के 24 राज्यों के संगठन से जुड़े पदाधिकारियों को बदल दिया। नीतिन नबीन के राष्ट्रीय अध्यक्ष बनने के बाद से छत्तीसगढ़ प्रदेश प्रभारी की कुर्सी खाली था, जिसमे पूर्व केंद्रीय मंत्री और बीजेपी के राष्ट्रीय महामंत्री स्मृति ईरानी को छत्तीसगढ़ का प्रदेश प्रभारी बनाया गया। उनके सहयोग के लिए बिहार के बीजेपी नेता और राष्ट्रीय मंत्री सिद्धार्थ शंभु को सह प्रभारी बनाकर नितिन नबीन ने अपनी पकड़ मजबूत रखा है। दरअसल नीतिन नबीन विगत पांच वर्षो तक छत्तीसगढ़ के प्रदेश प्रभारी रहे, उन्होंने सत्ता में वापसी के लिए जी-तोड मेहनत किया था। उनकी बनाई रणनीति का परिणाम था कि बीजेपी ने सत्ता में वापसी की, विपक्ष में रहते नीतिन नबीन ने प्रदेश के कोना-कोना को छान मारा था। एक एक जिलाध्यक्ष और ब्लॉक अध्यक्षों से उनका सीधा संपर्क था। वे छत्तीसगढ़ के बीजेपी नेताओ को बेहतर तरीके से जानते है, राष्ट्रीय अध्यक्ष बनने के बाद अपने सहयोगी रहे सिद्धार्थ शंभु को सह प्रभारी बनाकर अपनी पकड़ मजबूत रखा है।

छत्तीसगढ़ भाजपा संगठन के मजबूत स्तंभ रहे पवन साय और अजय जामवाल की विदाई हो गई है। पवन साय मूलत: जशपुर जिले के सिरिमकेला गाँव के रहवासी है, विभाग प्रचारक के बाद सीधे उन्हें संगठन की कमान सौपा गया था। श्री साय साल 2016 से संगठन महामंत्री का दायित्व संभाल रहे थे, इस दौरान प्रदेश में विधासनभा और लोकसभा चुनाव भी हुए। साल 2018 में बीजेपी चुनाव हार गई और जिसे दोबारा सत्ता में लाना बड़ी चुनौती थी। साल 2020 में हिमांचल प्रदेश निवासी प्रचारक अजय जामवाल को क्षेत्रीय संगठन मंत्री बनाकर भेजा गया था। पवन साय को झारखंड में बीजेपी संगठन महामंत्री बनाया गया तो अजय जामवाल को महाराष्ट्र की जिम्मेदारी दी गई। झारखंड में साल 2022 से बीजेपी संगठन महामंत्री का काम संभाल रहे कर्मवीर सिंह को छत्तीसगढ़ बीजेपी की जिम्मेदारी दी गई। बीजेपी ने आमूलचूल परिवर्तन कर दिया है।



पवन साय-जामवाल की छुट्टी, कर्मवीर को कमान

पवन साय साल 2016 से संगठन महामंत्री का दायित्व संभाल रहे थे, इस दौरव छत्तीसगढ़ भाजपा में अनेक परिवर्तन हुए। पार्टी चुनाव हारी, विपक्ष में रहते सर्कार के खिलाफ जोरदार माहौल बनाया और साल 2023 में भूपेश बघेल की कांग्रेस सरकार को सत्ता से बेदखल कर दिया। पवन की जगह कर्मवीर सिंह को छत्तीसगढ़ बीजेपी संगठन को संभालने की चुनौती होगी। कर्मवीर मूलत: उत्तरप्रदेश के मथुरा के रहवासी है, साल 1993 से आरएसएस के प्रचारक के रूप में काम कर रहे है। उत्तर प्रदेश के दो संघ प्रांतो के प्रान्त प्रचारक रहे चुके है। साल 2022 में उन्हें झारखंड में बीजेपी संगठन का काम सौपा था, तब से सितंबर 2026 तक वे संगठन को संवारने में लगे रहे। कर्मवीर के सामने छत्तीसगढ़ में बीजेपी सरकार और संगठन के बीच बेहतर तालमेल बिठाने की चुनौती होगी।

पवन के विदाई की वजह ?

राजनीतिक गलियारों में चली चर्चाओं अनुसार साल 2023 में बीजेपी की सरकार में वापसी के बाद पवन साय की सक्रियता बढ़ गई थी। पांच सालों तक विपक्ष रहे बीजेपी के देवतुल्य कार्यकर्ताओं को सत्ता और संगठन से अपेक्षाएं थी, पर वह साल भर बाद ही नाराजगी में बदलने लगी। धीरे धीरे बीजेपी के कार्यकर्ताओ में सुनवाई ना होने, और अन्य कारणों से सत्ता के साथ संगठन से नाराजगी बढ़ने लगी थी। बंगाल विधानसभा चुनाव में बीजेपी ने उन्हें 50 से अधिक सीटों का चुनाव प्रबंधन की जिम्मेदारी सौंपा था, परिणाम पक्ष में आने पर उन्हें संगठन शिल्पी का नाम दिया दिया गया। बताते है कि उसके बाद से पवन साय ने संगठन का काम लगभग बंद कर दिया था। दरअसल सरकार और संगठन के बीच किसी बातों को लेकर सामंजस्य का अभाव था, सरकार की संगठन से अपेक्षायें रहती पर संगठन अन्य कामों में उलझे रहते। ऐसे में पार्टी कार्यकर्ताओं में नाराजगी बढ़ रही थी। अंदरूनी चर्चाओं अनुसार पवन साय ने सरकार के समानांतर एक अलग व्यवस्था बना लिया था, उनके करीबी दर्जन भर लोग उसमे शामिल थे, जिससे सरकार में बैठे लोग असहज महसूस कर रहे थे।

प्रदेश भर में कार्यकर्ताओ का इस्तीफा..

संगठन और सरकार से व्यवहार से नाराज कार्यकर्ताओ ने प्रदेश भर के अलग अलग जिलों में इस्तीफा देना प्रारंभ कर दिया था। लोकसभा चुनाव के बाद जुलाई 2024 में धमतरी में भाजपा के नाराज कार्यकर्ताओं ने सामूहिक इस्तीफे दिया। जुलाई 2025 में नारायणपुर जिले के भाजपा जनप्रतिनिधियों और पदाधिकारियों ने मुख्यमंत्री को पत्र भेजकर सामूहिक इस्तीफा देने की बात कही। पदाधिकारी जिला प्रशासन

के अधिकारियो से नाराज थे। सितंबर 2025 में धमतरी जिले के कार्यकर्ताओ ने भ्रष्टाचार से नाराज थे, सत्ता संगठन तक बाते पहुंचाई पर निराकरण नहीं हुआ तो धमतरी के भाजपा कार्यालय में जिलाध्यक्ष के नाम 400 कार्यकर्ताओं ने इस्तीफा सौंप दिया। भिलाई भाजपा में युवा मोर्चा की कार्यकारिणी को लेकर दो अलग-अलग सूची सामने आई। इससे कार्यकर्ताओं में असमंजस की स्थिति बनी और बड़ी संख्या में कार्यकर्ता भाजपा कार्यालय पहुंचे, मामला संगठन के भीतर चल रही खींचतान तक पहुंच गया। राजनांदगांव जिले के डोंगरगढ़ शहर मंडल में 111 भाजपा नेताओं और कार्यकर्ताओं ने पार्टी की प्राथमिक सदस्यता से सामूहिक इस्तीफा देने की घोषणा की। इस्तीफा देने वालों में मंडल, जिला और प्रदेश स्तर के वर्तमान और पूर्व पदाधिकारी, मोर्चा-प्रकोष्ठों के सदस्य, पूर्व पार्षद, बूथ अध्यक्ष और सक्रिय कार्यकर्ता शामिल थे।



इस्तीफा पत्र में मंडल अध्यक्ष जसमीत सिंह बन्नोआना पर परिवारवाद, गुटबाजी और पुराने कार्यकर्ताओं की उपेक्षा के आरोप लगाए गए। पूर्व विधायक एवं प्रदेश उपाध्यक्ष रामजी भारती के प्रभाव में मंडल अध्यक्ष के काम करने का आरोप भी लगाया गया। इसके बाद 1 अगस्त तक डोंगरगढ़ में 25 और कार्यकर्ताओं के इस्तीफे की खबर सामने आई। इस तरह इस्तीफा देने वाले नेताओं और कार्यकर्ताओं की संख्या 136 तक पहुंच गई। भारतीय जनता युवा मोर्चा के पूर्व प्रदेशाध्यक्ष रवि भगत को पार्टी से निकाल दिया गया।

वीडियो कांड से हंगामा

दिसंबर 2025 में मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय का एक (AI) निर्मित, एनिमेटेड वीडियो सोशल मीडिया में वायरल हुआ था। वीडियो में छत्तीसगढ़ बीजेपी के तत्कालीन प्रभारी नीतिन नबीन को मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय से 1500 करोड़ रुपये की मांग करते दिखाया गया था। इस वीडियो के बाद हंगामा मच गया, आनन फानन में रायपुर उत्तर के विधायक पुरंदर मिश्रा ने सिविल लाइन पुलिस थाना में अज्ञात लोगो पर FIR कराया था। वीडियो के जरिए मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय, उपमुख्यमंत्री अरुण साव व विजय शर्मा, वित्त मंत्री ओपी चौधरी, क्षेत्रीय संगठन महामंत्री अजय जामवाल, संगठन महामंत्री पवन साय और कोषाध्यक्ष राम गर्ग की छवि खराब करने की कोशिश की गई थी। वीडियो में दावा किया गया था कि यह 1500 करोड़ रुपये का कलेक्शन पार्टी के वरिष्ठ नेता नितिन नवीन के लिए किया जा रहा है। पुलिस ने जाँच पड़ताल की वीडियो बनाने वाले बीजेपी की सोशल मीडिया टीम से जुड़े मिले। अंकित दुबे, आकाश जोशी, जावेद, यश का नाम सामने आया था। पुलिस ने कुल पांच लोगो को गिरफ्तार किया था। जाँच के बाद पुलिस ने इस घटना के लिए एनएसयूआई के पदाधिकारी असलम मिर्जा को मास्टर माइंड बताया था। इस वीडियो ने सरकार और संगठन के बीच चल रहे मतभेदों को उजागर कर दिया था।

स्मृति- सिद्धार्थ और कर्मवीर की चुनौती

सरकार में होने के बाद भी बीजेपी कार्यकर्ताओ में नाराजगी होना, सरकार और संगठन दोनों के लिए ठीक नहीं है। प्रदेश भर में हजारों कार्यकर्ताओं ने इस्तीफा दिया, उन्हें मनाने और समझाने का प्रयास भी नहीं हुआ। सरकार दिसंबर में तीन साल पूरा कर लेगी और चुनाव के तरफ कदम आगे बढ़ा रही है ऐसे में असंतुष्ट और नाराज कार्यकर्ताओं को साधना बड़ी चुनौती होगी। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय की सौम्यता और सरल छवि का फायदा प्रशासनिक अधिकारियों ने उठाया, उन्हें नियंत्रित करना आसान नहीं होगा। पहली बार मंत्री बने माननीयों ने सिस्टम को ट्रैक से उतारा है उसे ट्रेक में लाने की जिम्मेदारी भी स्मृति ईरानी, सिद्धार्थ शंभु और कर्मवीर सिंह पर होगी।

मंत्री केदार कश्यप और पत्नी शांति कश्यप फिर विवादों में..

स्वतंत्र बोल डेस्क

छत्तीसगढ़ सरकार के परिवहन, वन जलवायु परिवर्तन और सहकारिता मंत्री केदार कश्यप और उनकी पत्नी शांति कश्यप फिर विवादों में है। केदार कश्यप की पत्नी शांति कश्यप की कंपनी को रायपुर विकास प्राधिकरण द्वारा करोडो का फायदा पहुंचाने के आरोप लगा है। कांग्रेस ने इसके दस्तावेज भी सार्वजनिक किया है कि मंत्री के रसूख के चलते रायपुर विकास प्राधिकरण (RDA) के नगर विकास योजना में केदार कश्यप को फायदा पहुंचाया गया। विवादों के केंद्र में कैबिनेट मंत्री केदार कश्यप, उनकी पत्नी शांति कश्यप और RDA के जिम्मेदार है।



जमीन अधिग्रहण और मुआवजे पर सवाल

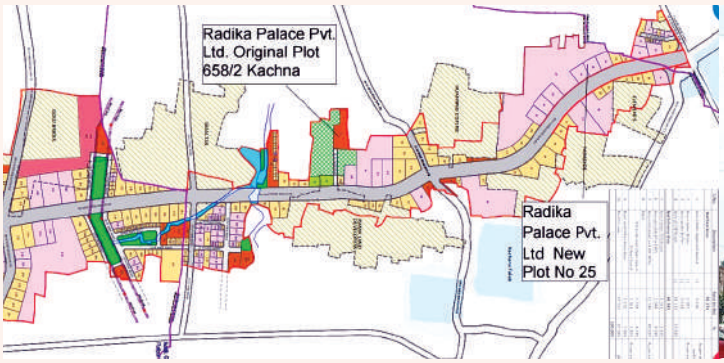
मंत्री केदार कश्यप की पत्नी शांति कश्यप राधिका पैलेस प्राइवेट लिमिटेड की निदेशक हैं। कंपनी के पास रायपुर के कचना इलाके के नालापारा क्षेत्र में करीब 1.33 एकड़ जमीन है जिसका खसरा नंबर 658/2 है। RDA के नगर विकास योजना में इस जमीन का अधिग्रहण किया गया और बदले में उन्हें सड्डु क्षेत्र में 23,327 वर्गफीट यानी करीब 2,168 वर्गमीटर जमीन दिया गया, जिसका प्लाट नंबर 25 है। कांग्रेस संचार विभाग और चिकित्सा प्रकोष्ट के अध्यक्ष डॉ. राकेश गुप्ता ने प्रेस वार्ता कर सीधा आरोप लगाया कि नियमो का उल्लंघन कर मंत्री की पत्नी की कंपनी को लाभ पहुंचाया गया है, मंत्री तत्काल इस्तीफा दें। वर्तमान में कचना के संकरी गली में भूखंड है, वहा जाने का रास्ता बेहद संकरा है। वर्तमान में उक्त जमीन की कीमत लाखो रुपये है। वहा से दो किलोमीटर दूर सड्डु क्षेत्र में भूखंड दिया गया, जो मुख्य चौराहे में है। वहा जमीन की कीमत करोडो रुपये में होगी।

RDA ने साधी चुप्पी - इस्तीफा की मांग

रायपुर विकास प्राधिकरण द्वारा नगर विकास योजना अंतर्गत लाभांडी से सड्डु तक सड़क बनाया जायेगा, जिसके लिए रास्ते में आने वाले जमीनों का अधिग्रहण कर उन्हें विकसित भूखंड दिया जायेगा। इस योजना में कुल 37 भूखंड स्वामी प्रभावित होंगे और उन्हें बेहतर भूखंड भी मिलेगा। मंत्री के पत्नी की कंपनी को फायदा पहुंचाने के आरोपों पर RDA ने जिम्मेदारों ने चुप्पी साध रखी है। वही बीजेपी मंत्री के बचाव में है। बीजेपी ने उक्त रास्ते में प्रभावित होने वाले लोगो की सूची जारी की। जिसके अनुसार कांग्रेस नेता आनंद कुकरेजा, शांति कश्यप की कम्पनी राधिका पैलेस प्राइवेट लिमिटेड, कारोबारी सुनीता अशोक बरडिया, राकेश सरावगी, महेंद्र कुमार गोयनका, अशोक बरडिया, राजकुमार दम्माणी, सूचित बोथरा, सावरिया अग्रवाल समेत कुल 37 लोगो के नाम है। कांग्रेस ने मंत्री केदार कश्यप से इस्तीफा माँगा है।

शांति कश्यप के कंपनियों की सच्चाई

राधिका पैलेस प्राइवेट लिमिटेड शांति कश्यप, केदार कश्यप के बड़े भाई दिनेश कश्यप और खितेश मौर्य बतौर निदेशक शामिल है। zaubacorp.com के अनुसार यह कंपनी साल 2005 में बनी थी, जिसमे दिनेश कश्यप बतौर निदेशक थे। साल 2010 में शांति कश्यप और खितेश मौर्य भी निदेशक बन जुड़ गए। यह कंपनी मछली पालन, मछली उत्पादों का व्यापार करती है। इसका पता नयापारा, टेलीफ़ोन एक्सचेंज के पास जगदलपुर रजिस्टर्ड है। शांति कश्यप इसके अलावा एक दूसरी कंपनी में भी निदेशक है जिसका नाम KK Agri





Storej private limited है। इस कंपनी की शुरुआत अक्टूबर 2010 में हुआ, इसमें शांति कश्यप और खितेश मौर्य निदेशक है। इसका पता देवेंद्र नगर सेक्टर 3 रायपुर रजिस्टर्ड है। यह शैल कम्पनी तो नहीं, इसकी जाँच होना चाहिए।

विवादों के केदार

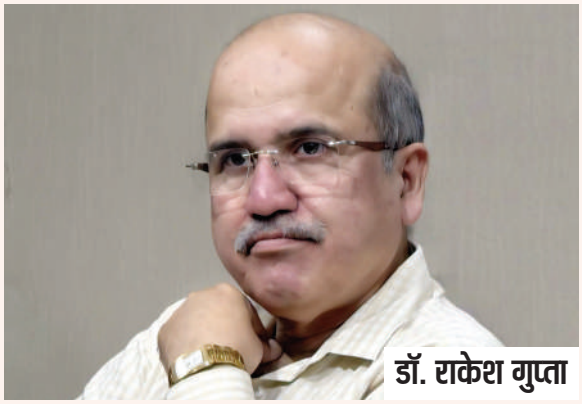
	न हो तो उसका वर्णन)		
(1)	(2)	(3)	(4)
658/2	0.5420 हे.	नाम- राधिका पैलेस प्रा.लि. व्दारा डाय.शांती कश्यप, लिंग- महिलापिता- पति केदार कश्यप, वर्ग- सामान्य , जाति- General	

केदार कश्यप बीजेपी के वरिष्ठ नेताओ में से एक है। बीजेपी की सरकारों में 17 वर्षो तक मंत्री रहने का रिकॉर्ड भी बनाया है, लेकिन विगत कुछ वर्षो से लगातार विवादों में है। साल 2015 उनकी शांति कश्यप के ओपन स्कूल की परीक्षा में फर्जीवाड़ा हुआ, तब केदार कश्यप स्कूल शिक्षा मंत्री थे। मंत्री की पत्नी शांति कश्यप की जगह कोई दूसरी महिला परीक्षा देते पकड़ाई थी। तत्कालीन में पंडित सुंदरलाल शर्मा विश्वविद्यालय के कुलपति ने एफआईआर करने थाने में शिकायत भी किया था। जिस प्रदेश का व्यक्ति स्कूल शिक्षा विभाग का मंत्री हो और उसकी पत्नी फर्जीवाड़ा में पकड़ा जाये तो शर्म की बात होगी ही।

साल 2022 में रेलवे द्वारा जगदलपुर में रेलवे की जमीन पर कथित अवैध अतिक्रमण हटाने की कार्यवाही रेलवे द्वारा की गई थी। तत्कालीन में केदार कश्यप और बीजेपी नेताओ ने इसका विरोध किया और दोनों पक्षों में जमकर बवाल हुआ था। रेलवे के अधिकारियों ने केदार कश्यप समेत बीजेपी नेताओ पर सरकारी काम में बाधा डालने, मारपीट समेत गंभीर आरोप लगाकर बोधघाट थाने में शिकायत किया था। रेलवे के अधिकारियों को पुलिस को 16 GB का पेनड्राइव भी बतौर साक्ष्य सौपा था।

रेस्ट हाउस में मारपीट

सितंबर 2025 में केदार कश्यप ने जगदलपुर के सरकारी रेस्ट हाउस के रसोइयां के साथ मारपीट किया था। रसोइयां खितेद्र पांडेय दैनिक वेतनभोगी के रूप में वर्षो में रेस्ट हाउस में काम कर रहा है। मंत्री केदार ने कमरा जल्दी नहीं खोलने को लेकर कुक अश्लील गाली गलौच करते हुए उसकी पत्नी के सामने पीट दिया था, मौके पर मौजूद लोगो ने बीच बचाव किया था न। कुक ने मंत्री के खिलाफ जगदलपुर के सिटी कोतवाली थाने में शिकायत भी किया था।

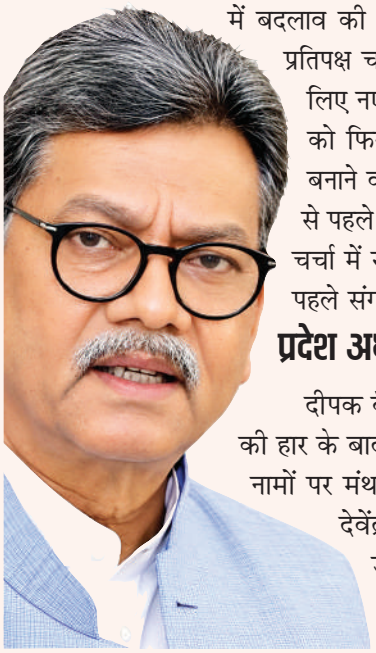

डॉ. राकेश गुप्ता

कांग्रेस में खींचतान

गुटों में बटी कांग्रेस, बीजेपी से कैसे लड़ेगी ?

स्वतंत्र बोल डेस्क

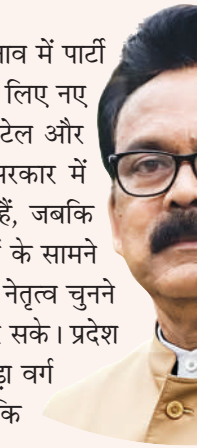
छत्तीसगढ़ कांग्रेस में इन दिनों सबसे बड़ा सवाल यही है कि पार्टी की कमान किसके हाथ में रहेगी और 2028 के विधानसभा चुनाव की तैयारी किस नेतृत्व में होगी। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष दीपक बैज का कार्यकाल तीन साल से ज्यादा हो चुका है। संगठन में बदलाव की चर्चा के बीच पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल, पूर्व उपमुख्यमंत्री टीएस सिंहदेव, नेता प्रतिपक्ष चरणदास महंत और दूसरे वरिष्ठ नेताओं की भूमिका पर नजर है। प्रदेश अध्यक्ष के लिए नए नामों की चर्चा ने पार्टी के भीतर अलग-अलग विचारों और राजनीतिक समीकरणों को फिर सामने ला दिया है। कांग्रेस में गुटबाजी की चर्चा नई नहीं है। 2018 में सरकार बनाने वाली पार्टी 2023 के विधानसभा चुनाव में सत्ता से बाहर हो गई। उस चुनाव से पहले भूपेश बघेल और टीएस सिंहदेव के बीच मुख्यमंत्री पद को लेकर मतभेद चर्चा में रहे थे। अब पार्टी के सामने 2028 में वापसी की तैयारी है, लेकिन उससे पहले संगठन में नेतृत्व और जिम्मेदारियों को लेकर सहमति बनाना बड़ी चुनौती है।

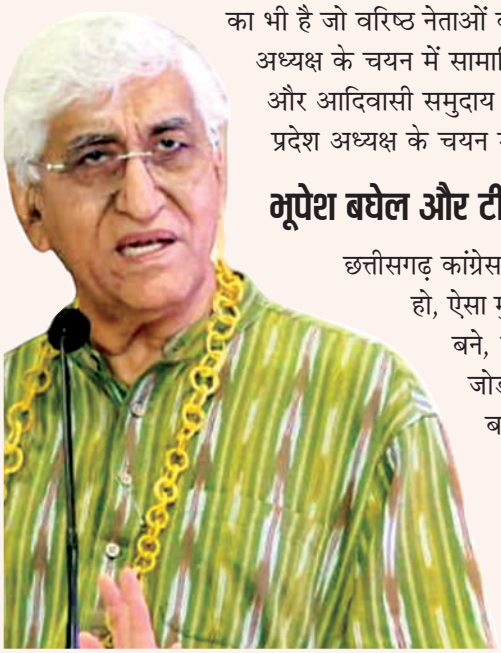




प्रदेश अध्यक्ष की कुर्सी किसकी ?

दीपक बैज जुलाई 2023 में प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष बनाए गए थे, विधानसभा चुनाव में पार्टी की हार के बाद से ही संगठन में बदलाव की चर्चा होती रही है। अब प्रदेश अध्यक्ष के लिए नए नामों पर मंथन की बात सामने आ रही है। इनमें टीएस सिंहदेव, विधायक उमेश पटेल और देवेंद्र यादव जैसे नामों की चर्चा रही है। सिंहदेव वरिष्ठ नेता हैं और सरकार में उपमुख्यमंत्री रह चुके हैं। उमेश पटेल युवा नेतृत्व का चेहरा माने जाते हैं, जबकि देवेंद्र यादव की पहचान युवा और सक्रिय विधायक के रूप में है। पार्टी के सामने सवाल केवल किसी एक नेता को अध्यक्ष बनाने का नहीं, बल्कि ऐसा नेतृत्व चुनने का भी है जो वरिष्ठ नेताओं को साथ लेकर चल सके और कार्यकर्ताओं को सक्रिय कर सके। प्रदेश अध्यक्ष के चयन में सामाजिक समीकरण भी महत्वपूर्ण हैं। छत्तीसगढ़ में अन्य पिछड़ा वर्ग और आदिवासी समुदाय की बड़ी आबादी है। पार्टी के भीतर एक राय यह रही है कि प्रदेश अध्यक्ष के चयन में सामाजिक प्रतिनिधित्व को ध्यान में रखा जाए।





भूपेश बघेल और टीएस सिंहदेव में मतभेद!

छत्तीसगढ़ कांग्रेस की अंदरूनी राजनीति और टीएस सिंहदेव व भूपेश बघेल का जिक्र ना हो, ऐसा मुश्किल है। साल 2018 में कांग्रेस की जीत के बाद भूपेश बघेल मुख्यमंत्री बने, जबकि सिंहदेव सरकार में वरिष्ठ मंत्री रहे। उस समय दोनों नेताओं की जोड़ी को पार्टी की जीत के अहम कारणों में गिना गया था। लेकिन सरकार बनने के कुछ समय बाद ही मुख्यमंत्री पद को लेकर ढाई-ढाई साल के कथित फार्मूले की चर्चा शुरू हो गई। सिंहदेव के समर्थकों के बीच उम्मीद थी कि उन्हें भी मुख्यमंत्री बनने का मौका मिल सकता है। दूसरी ओर, बघेल की सरकार में पकड़ मजबूत बनी रही। समय के साथ दोनों नेताओं के बीच मतभेद सार्वजनिक चर्चा का विषय बन गया था। साल 2023 के विधानसभा चुनाव से पहले सिंहदेव को उपमुख्यमंत्री बनाया

गया था, इसे दोनों नेताओं के बीच संतुलन बनाने की कोशिश के तौर पर देखा गया। लेकिन चुनाव में कांग्रेस सत्ता में वापसी नहीं कर सकी। अब प्रदेश अध्यक्ष के चयन को लेकर चल रही चर्चा के बीच यह सवाल फिर उठ रहा है कि पार्टी के दोनों वरिष्ठ नेता भविष्य की रणनीति में किस तरह साथ काम करेंगे।



सिंहदेव ने गुटबाजी के आरोपों को किया खारिज



कांग्रेस के संगठन सृजन प्रशिक्षण शिविर के दौरान टीएस सिंहदेव से भूपेश बघेल और देवेंद्र यादव के बीच गुटबाजी को लेकर सवाल पूछा गया था। सिंहदेव ने इसे गुटबाजी मानने से इनकार किया। उनका कहना था कि एक ही परिवार में दो लोगों की राय अलग हो सकती है, लेकिन हर अलग राय को गुटबाजी नहीं कहा जा सकता। इस बयान के पीछे राजनीतिक संदेश भी महत्वपूर्ण था।

दीपक बैज गुट

प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष दीपक बैज ने भी सितंबर में गुटबाजी के आरोपों को खारिज किया था। सरगुजा में उन्होंने कहा कि कांग्रेस में गुटबाजी नहीं है और इस तरह की चर्चा भाजपा का प्रचार है। उन्होंने यह भी कहा कि कांग्रेस के नेता एक साथ दिखाई देते हैं और मिलकर काम करते हैं। बैज के बयान से साफ है कि प्रदेश नेतृत्व सार्वजनिक रूप से पार्टी में एकजुटता का संदेश देना चाहता है लेकिन प्रदेश अध्यक्ष को बदलने की चर्चा और अलग-अलग नेताओं के नाम सामने आने से संगठन के भीतर नेतृत्व को लेकर चल रही बातचीत भी सार्वजनिक हो रही है।



युवा कांग्रेस चुनाव में अलग-अलग समीकरण

वरिष्ठ नेताओं के बीच चल रही खींचतान का असर युवा कांग्रेस के चुनाव में भी दिखाई दिया। प्रदेश अध्यक्ष पद के लिए सत्येंद्र चेलक और शैलेंद्र बंजारे के नाम सामने आने के बाद उनके राजनीतिक समर्थन को लेकर चर्चाएं हुईं। चेलक को भूपेश बघेल के करीबी खेमे से जोड़ा गया, जबकि बंजारे को देवेंद्र यादव के समर्थन से जोड़कर देखा गया। दोनों उम्मीदवारों के नामांकन पर शिकायतों के बाद रोक लगी और फिर उन्हें बहाल कर दिया गया। बाद में मतदान प्रक्रिया को लेकर भी सवाल उठे। पूर्व मंत्री अमरजीत भगत और शिव डहरिया ने चुनाव में कथित गड़बड़ियों को लेकर आपत्ति जताई और प्रक्रिया पर सवाल उठाए। यह विवाद अपने आप में युवा संगठन के चुनाव से जुड़ा है, लेकिन इसने प्रदेश कांग्रेस के भीतर चल रहे समीकरणों को भी चर्चा में ला दिया। युवा कांग्रेस का अध्यक्ष पद पार्टी के लिए महत्वपूर्ण है, क्योंकि इस संगठन से आगे चलकर नए नेता और कार्यकर्ता तैयार होते हैं।



सुखदेव भगत को छत्तीसगढ़ की जिम्मेदारी

कांग्रेस ने संगठन में बदलाव करते हुए झारखंड के सुखदेव भगत को छत्तीसगढ़ का प्रदेश प्रभारी। इससे पहले यह जिम्मेदारी सचिन पायलट के पास थी। पायलट को पंजाब की जिम्मेदारी दी गई, जबकि भूपेश बघेल को असम का प्रभारी बनाया गया। सुखदेव भगत के पास गुटों में बंटे कोंग्रेसी नेताओ को एकजुट करने, तालमेल बनाना, संगठन को मजबूत करने का है। कांग्रेस के सामने फिलहाल तीन बड़ी चुनौतियां हैं जिसमे प्रदेश अध्यक्ष को लेकर जल्द सहमति बनाना और संगठन को स्पष्ट नेतृत्व देना। भूपेश बघेल, टीएस सिंहदेव, चरणदास महंत, दीपक बैज और दूसरे वरिष्ठ नेताओं के बीच तालमेल बनाए रखना और जिला और ब्लॉक स्तर पर कार्यकर्ताओं को सक्रिय कर पार्टी संगठन को मजबूत करना।



CGPSC भर्ती पर सवाल

पेपर लीक, गिरफ्तारी और विवादित चयन.. भर्ती रद्द करने पर चुप्पी ?

स्वतंत्र बोल डेस्क

छत्तीसगढ़ लोक सेवा आयोग की CGPSC-2021 भर्ती को लेकर विवाद एक बार फिर चर्चा में है। परीक्षा में गड़बड़ियों, चयनित अभ्यर्थियों के प्रभावशाली परिवारों से संबंध और जांच एजेंसियों की कार्रवाई के बाद अब यह सवाल भी उठ रहा है कि इस मामले में जिन लोगों के नाम सामने आए, उनकी नियुक्ति, सेवा और वर्तमान पदस्थापना की स्थिति क्या है। सरकार ने किन लोगों के खिलाफ कार्रवाई की और किसे प्रशासनिक जिम्मेदारियां सौंपी गईं? इसकी स्पष्ट जानकारी सार्वजनिक होनी चाहिए। इस भर्ती के तहत 171 पदों के लिए परीक्षा आयोजित की गई थी। प्रारंभिक परीक्षा फरवरी 2022 को हुई, जबकि मुख्य परीक्षा मई 2022 में आयोजित की गई, साक्षात्कार के बाद 11 मई 2023 को अंतिम चयन सूची जारी की गई। परिणाम सामने आने के बाद चयन प्रक्रिया पर सवाल उठे। कुछ चयनित अभ्यर्थियों के परिवारों के संबंध तत्कालीन आयोग पदाधिकारियों, वरिष्ठ अधिकारियों, नेताओं और प्रभावशाली कारोबारियों से थे।



टॉप- 20 में 13 अभ्यर्थियों के संबंधों पर उठे सवाल

जनवरी 2026 में सामने आई सीबीआई की अंतिम चार्जशीट से जुड़ी जानकारी के अनुसार, जांच एजेंसी ने दावा किया कि शीर्ष 20 चयनित अभ्यर्थियों में से 13 के संबंध सेवारत या पूर्व अधिकारियों, राजनीतिक नेताओं अथवा प्रभावशाली कारोबारियों से थे। सीबीआई ने मामले में 29 लोगों को आरोपी बनाया। जांच में प्रश्नपत्र लीक करने, चुनिंदा अभ्यर्थियों को परीक्षा से पहले तैयारी कराने और चयन प्रक्रिया को प्रभावित करने जैसे आरोप शामिल हैं। यह मामला इसलिए गंभीर है क्योंकि लोक सेवा आयोग की परीक्षा से प्रशासनिक और पुलिस सेवाओं के अधिकारियों का चयन होता है। ऐसी परीक्षा में निष्पक्षता और पारदर्शिता का भरोसा सबसे महत्वपूर्ण होता है। यदि चयन प्रक्रिया में किसी को अनुचित लाभ पहुंचाने के आरोप सामने आते हैं, तो उनकी निष्पक्ष जांच और कार्रवाई की स्थिति भी जनता के सामने आनी चाहिए। हालांकि, किसी अभ्यर्थी का किसी अधिकारी, नेता या कारोबारी से रिश्तेदार होना अपने आप



तत्कालीन मुख्यमंत्री भूपेश बघेल के साथ सीजीपीएससी अध्यक्ष टामन सिंह सोनवानी समेत पूरी टीम।

में गड़बड़ी का प्रमाण नहीं है। हर व्यक्ति के मामले में जांच एजेंसी के आरोप, उपलब्ध साक्ष्य और न्यायालय की स्थिति अलग-अलग देखना जरूरी है।

आयोग अध्यक्ष के रिश्तेदारों का हुआ चयन

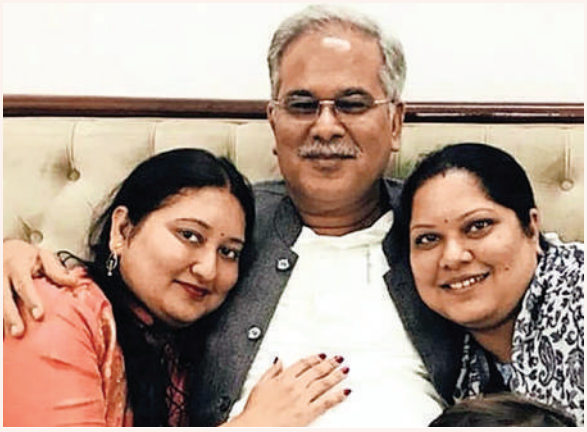
इस भर्ती में तत्कालीन CGPSC अध्यक्ष टामन सिंह सोनवानी के परिवार से जुड़े अभ्यर्थियों के चयन हुआ है। उनके दत्तक पुत्र नितेश सोनवानी और बहू निशा कोशले का चयन डिप्टी कलेक्टर पद पर हुआ, उनके बड़े भाई के बेटे साहिल सोनवानी का चयन डीएसपी पद पर और बहन की बेटी सुनीता जोशी का चयन श्रम अधिकारी पद पर हुआ था। परिवार से संबंधित दीपा आदिल के चयन को लेकर भी विवाद हुआ। इन रिश्तों और चयन को लेकर उठे सवालों ने भर्ती प्रक्रिया की निष्पक्षता पर बहस तेज की। बाद में सीबीआई ने CGPSC के तत्कालीन सचिव जीवन किशोर ध्रुव, तत्कालीन परीक्षा नियंत्रक आरती वासनिक, डिप्टी कलेक्टर सुमित ध्रुव, डिप्टी कलेक्टर मिशा कोशले और जिला आबकारी अधिकारी दीपा आदिल समेत पांच लोगों को गिरफ्तार किया। सीबीआई के अनुसार साल 2020 और 2021 की भर्ती परीक्षाओं में अनियमितताओं की जांच का हिस्सा था। भूपेश बघेल के तत्कालीन ओएसडी रहे चेतन बोरघारिया, कोचिंग सेंटर संचालक उत्कर्ष चंद्राकर समेत अन्य लोगो को गिरफ्तार किया गया है।

फिर नियुक्तियां क्यों हुईं?

राज्य सरकार ने CBI जांच होने के बाद साल 2021 भर्ती के चयनित अभ्यर्थियों की नियुक्तियां रोक लगाया था दी गई थीं। जिसे कुछ अभ्यर्थियों ने हाईकोर्ट में चुनौती दी। उनका तर्क था बाकी लोगो के चलते पूरी नियुक्ति प्रक्रिया को रोक दिया गया जो गलत है। कोर्ट विवादित नामो के अलावा बाकी लोगो के नियुक्ति क रास्ता साफ़ करे। कोर्ट में सरकारी वकील ने सही तरीके से पक्ष नहीं रख पाए और अदालत ने चयनित अभ्यर्थियों की नियुक्ति करने का निर्देशित किया कि जिनके नाम CBI की चार्जशीट में है या जिनके खिलाफ व्यक्तिगत तौर पर कोई गडबड़ी नहीं मिली उन्हें नियुक्ति आदेश जारी करें। राज्य सरकार ने इस फैसले को सुप्रीम कोर्ट में चुनौती दी, लेकिन मार्च 2026 में SLP खारिज हो गई और कोर्ट गए अभ्यर्थियों को नियुक्ति दी गई।

सीजीपीएससी में पेपर लीक, लाखो रुपयों के





भूपेश बघेल की बेटी बनी असिस्टेंट प्रोफेसर..

पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल की बेटी दीप्ती बघेल का चयन असिस्टेंट प्रोफेसर के पद पर हुआ। साल 2019 में CGPSC ने असिस्टेंट प्रोफेसर का विज्ञापन जारी किया था, साल 2020 में चयन सूची में दीप्ती बघेल एक नाम शामिल था। बीजेपी नेता उज्जवल दीपक ने दीप्ति के चयन पर सावला उठाया था और मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय से मिलकर पूरी भर्ती प्रक्रिया की जाँच की मांग किया था।

लेनदेन, रसूखदारों के रिश्तेदारों का बैकडोर से चयन, जिम्मेदारों की गिरफ्तारी... यह सब जाँच एजेंसियो की रिपोर्ट में प्रमाणित होने के बाद राज्य सरकार भर्ती को निरस्त क्यों नहीं कर पा रही है? झारखंड में युवाओ ने JPSC में भर्ती में अनियमितता और फर्जीवाड़े को लेकर महीने भर तक प्रदर्शन किया। हजारो पुलिस सुरक्षा को पार कर विधानसभा के भीतर घुस गए थे.. अंतत: राज्य की सरकार ने पूरी भर्ती को निरस्त करने की घोषणा की, तो छत्तीसगढ़ की सरकार भर्ती को निरस्त क्यों नहीं कर पा रही? पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश की सरकार में अनियमितता हुई वे दंभ भरते हुए कह रहे कि अगर गलत हुआ तो सरकार भर्ती निरस्त करे, ऐसे में सरकार की चुप्पी अनेको सवाल को जन्म देती है।



सिर्फ टामनसिंह जिम्मेदार, सदस्य क्यों नहीं?

पूर्ववर्ती कांग्रेस की सरकार में टामन सिंह सोनवानी को अध्यक्ष, प्रवीण वर्मा, सरिता उइके और संत कुमार नेताम को सदस्य बनाया था। भर्ती में फर्जीवाडा हुआ तो जाँच एजेंसियो ने अध्यक्ष को गिरफ्तार किया, बाकी सदस्यों से शायद पूछताछ भी नहीं हुई.. तो पूरे फर्जीवाड़ा के लिए अकेले सोनवानी जिम्मेदार थे? CGPSC सदस्यों की नियुक्ति कांग्रेस सरकार में हुआ जो कोंग्रेसी नेताओं के रिश्तेदार है, और फर्जीवाड़ा में ये सोनवानी के बराबर के जिम्मेदार है। ऐसे में सरकार को तत्काल इन सदस्यों से इस्तीफा लेना चाहिए। झारखंड पीएससी में सरकार ने अध्यक्ष सहित सभी सदस्यों का इस्तीफा ले लिया था।

महीने भर बाद भी अध्यक्ष की कुर्सी खाली..

CGPSC की चैयरमेन रही रीता शांडिल्य 62 वर्ष की आयु पूरी करने के बाद 8 सितंबर को पदमुक्त हो गई, और आज जब हम खबर लिख रहे तो 40 दिनों बाद भी CGPSC के चैयरमेन की कुर्सी खाली है। सरकार ने सीजीपीएससी को यूपीएससी के तर्ज पर बेहतर करने और पारदर्शी तरीके से भर्ती करने सपना दिखाया था। विधानसभा चुनाव में युवाओं ने बीजेपी का जी भर कर साथ दिया पर सरकार महीने भर बाद भी सीजीपीएससी अध्यक्ष की नियुक्ति नहीं कर पा रही है। CGPSC की लगातार बदनामी होने से कोई अधिकारी अध्यक्ष बनने से बच तो नहीं रहे ? इस सवाल का जवाब ढूँढना चाहिए। अध्यक्ष नहीं होने से CGPSC का काम प्रभावित हो रहा हैं, दस्तावेजों का सत्यापन और इंटरव्यू स्थगित हो रहा है।

विकास के पैसों का हिसाब

विकास निधि खर्च करने में बृजमोहन अव्वल, भोजराज फिसड्डी!

स्वतंत्र बोल डेस्क

छत्तीसगढ़ के 11 लोकसभा सांसदों को अपने अपने क्षेत्रों में विकास कार्यों के लिए मिलने वाली सांसद स्थानीय क्षेत्र विकास योजना यानी सांसद निधि के खर्च का आंकड़ा सामने आया है। उपलब्ध एमपीएलएडीएस रिकॉर्ड के मुताबिक रायपुर सांसद बृजमोहन अग्रवाल ने सबसे ज्यादा 12.63 करोड़ रुपए खर्च किए हैं। उनके बाद दुर्ग सांसद विजय बघेल ने 12.06 करोड़ रुपए खर्च किए। दूसरी ओर कांकेर सांसद भोजराज नाग के क्षेत्र में अब तक 6.49 करोड़ रुपए का खर्च दर्ज है, जो 11 सांसदों में सबसे कम है।

सांसद निधि में सांसद अपने क्षेत्र की जरूरत के हिसाब से विकास कार्यों की अनुशंसा करते हैं। इसके बाद राशि जारी करने, काम को मंजूरी देने और उसे पूरा कराने की जिम्मेदारी संबंधित जिला प्रशासन की होती है। इसलिए यहां दिए गए आंकड़े सांसदों की ओर से निजी तौर पर खर्च की गई राशि नहीं, बल्कि उनके लोकसभा क्षेत्र में सांसद निधि से हुए खर्च को दर्शाते हैं।

बृजमोहन अग्रवाल, रायपुर लोकसभा



रायपुर लोकसभा क्षेत्र से भाजपा सांसद बृजमोहन अग्रवाल इस सूची में सबसे ऊपर हैं। उपलब्ध आंकड़ों के मुताबिक उनके क्षेत्र के लिए 15.37 करोड़ रुपए जारी हुए, जिनमें से 12.63 करोड़ रुपए खर्च हुए। खर्च का अनुपात 82.17 प्रतिशत है। बृजमोहन अग्रवाल लंबे समय से छत्तीसगढ़ की राजनीति में सक्रिय हैं। वे रायपुर दक्षिण विधानसभा क्षेत्र से कई बार विधायक रहे हैं। 2024 में उन्होंने रायपुर लोकसभा सीट से चुनाव जीतकर पहली बार लोकसभा में प्रवेश किया।

विजय बघेल, दुर्ग लोकसभा



दुर्ग से भाजपा सांसद विजय बघेल खर्च के मामले में दूसरे स्थान पर हैं। उनके क्षेत्र के लिए 14.70 करोड़ रुपए जारी हुए और 12.06 करोड़ रुपए खर्च हुए। उपयोगिता 82.10 प्रतिशत दर्ज है। विजय बघेल 2019 में पहली बार दुर्ग लोकसभा सीट से सांसद चुने गए थे और 2024 में दोबारा लोकसभा पहुंचे। वे छत्तीसगढ़ की राजनीति में लंबे समय से सक्रिय हैं।

कमलेश जांगड़े, जांजगीर चांपा लोकसभा



जांजगीर चांपा से भाजपा सांसद कमलेश जांगड़े के क्षेत्र में 11.46 करोड़ रुपए खर्च हुए। उनके क्षेत्र के लिए 15.03 करोड़ रुपए जारी हुए थे और खर्च का अनुपात 76.25 प्रतिशत रहा। कमलेश जांगड़े 2024 में पहली बार लोकसभा के लिए चुनी गईं। वे इससे पहले स्थानीय स्तर पर भी जनप्रतिनिधि के रूप में काम कर चुकी हैं।

रूपकुमारी चौधरी, महासमुंद

महासमुंद लोकसभा क्षेत्र की भाजपा सांसद रूपकुमारी चौधरी के क्षेत्र में 11.63 करोड़ रुपए खर्च हुए। कुल 15.30 करोड़ रुपए जारी राशि के मुकाबले यह 76.05 प्रतिशत है। रूपकुमारी चौधरी 2024 में



महासमुंद से लोकसभा पहुंचीं। इससे पहले वे छत्तीसगढ़ विधानसभा की सदस्य रह चुकी हैं।

महेश कश्यप, बस्तर लोकसभा

बस्तर के भाजपा सांसद महेश कश्यप के क्षेत्र में 11.11 करोड़ रुपए खर्च हुए हैं। कुल 14.70 करोड़ रुपए की जारी राशि में खर्च का अनुपात 75.62 प्रतिशत रहा। महेश कश्यप 2024 में बस्तर लोकसभा सीट से निर्वाचित होकर 18वीं लोकसभा पहुंचे। बस्तर लोकसभा क्षेत्र अनुसूचित जनजाति के लिए आरक्षित है।



ज्योत्सना चरणदास महंत, कोरबा लोकसभा

कोरबा से कांग्रेस सांसद ज्योत्सना चरणदास महंत के क्षेत्र में 11.47 करोड़ रुपए खर्च हुए। उनके लिए 15.51 करोड़ रुपए जारी हुए थे और खर्च का अनुपात 73.96 प्रतिशत है। ज्योत्सना महंत 2019 में पहली बार लोकसभा पहुंचीं और 2024 में दोबारा कोरबा से सांसद चुनी गईं। वे छत्तीसगढ़ के वरिष्ठ कांग्रेस नेता, छत्तीसगढ़ विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष चरणदास महंत की पत्नी हैं।



तोखन साहू, बिलासपुर लोकसभा

बिलासपुर से भाजपा सांसद तोखन साहू ने सांसद निधि से 10.18 करोड़ रुपए खर्च किए हैं। उनके क्षेत्र के लिए 14.70 करोड़ रुपए जारी हुए थे और उपयोगिता 69.29 प्रतिशत रही। तोखन साहू 2024 में बिलासपुर लोकसभा क्षेत्र से निर्वाचित हुए। वे केंद्र सरकार में आवासन एवं शहरी कार्य मंत्रालय में राज्य मंत्री भी हैं।



चिंतामणि महाराज, सरगुजा लोकसभा

सरगुजा से भाजपा सांसद चिंतामणि महाराज के क्षेत्र में 10.14 करोड़ रुपए खर्च हुए। कुल 14.70 करोड़ रुपए की जारी राशि के मुकाबले खर्च 69.02 प्रतिशत है। चिंतामणि महाराज 2024 में सरगुजा लोकसभा सीट से चुने गए। इससे पहले वे छत्तीसगढ़ विधानसभा के सदस्य रहे हैं।



राधेश्याम राठिया, रायगढ़ लोकसभा

रायगढ़ लोकसभा क्षेत्र के भाजपा सांसद राधेश्याम राठिया के क्षेत्र में 9.78 करोड़ रुपए खर्च हुए। उन्हें 15.97 करोड़ रुपए जारी हुए थे और खर्च का अनुपात 61.26 प्रतिशत रहा। राधेश्याम राठिया 2024 में पहली बार रायगढ़ लोकसभा सीट से सांसद चुने गए।

संतोष पांडेय, राजनांदगांव लोकसभा



राजनांदगांव से भाजपा सांसद संतोष पांडेय के क्षेत्र में 8.62 करोड़ रुपए खर्च हुए हैं। उनके क्षेत्र के लिए 14.70 करोड़ रुपए जारी हुए थे और उपयोगिता 58.68 प्रतिशत रही। संतोष पांडेय 2019 में पहली बार राजनांदगांव से लोकसभा पहुंचे और 2024 में दूसरी बार सांसद चुने गए।

भोजराज नाग, कांकेर लोकसभा



कांकेर से भाजपा सांसद भोजराज नाग इस आंकड़े में सबसे नीचे हैं। उनके क्षेत्र के लिए 16.46 करोड़ रुपए जारी हुए, जो 11 सांसदों में सबसे अधिक राशि है। इसके बावजूद अब तक 6.49 करोड़ रुपए खर्च हुए हैं। खर्च का अनुपात 39.46 प्रतिशत है। भोजराज नाग 2024 में कांकेर लोकसभा क्षेत्र से पहली बार सांसद चुने गए। पूरे छत्तीसगढ़ की तस्वीर देखें तो पिछले तीन वित्तीय वर्षों के दौरान 11 लोकसभा क्षेत्रों में 2,284 विकास कार्य मंजूर किए गए थे। इनमें 895 काम पूरे हुए, जबकि 1,389 काम लंबित हैं। सबसे खास बात यह है कि बृजमोहन अग्रवाल और विजय बघेल के क्षेत्रों में सांसद निधि से खर्च 12 करोड़ रुपए से ज्यादा है, जबकि भोजराज नाग के क्षेत्र में उपलब्ध राशि सबसे ज्यादा होने के बावजूद खर्च 6.49 करोड़ रुपए दर्ज है। इस तरह सांसद निधि के इस्तेमाल में अलग अलग लोकसभा क्षेत्रों के बीच खर्च में बड़ा अंतर दिखाई देता है।



स्वतंत्र बोल के अगले अंक में छत्तीसगढ़ के केबिनेट मंत्रियों का रिपोर्ट कार्ड और छत्तीसगढ़ से राज्य सभा सांसदों का विशेष खबर पढ़े।

किस सांसद के क्षेत्र में कितना खर्च

सांसद	लोकसभा क्षेत्र	जारी राशि	खर्च	उपयोगिता
बृजमोहन अग्रवाल	रायपुर	15.37 करोड़	12.63 करोड़	82.17 प्रतिशत
विजय बघेल	दुर्ग	14.70 करोड़	12.06 करोड़	82.10 प्रतिशत
कमलेश जांगड़े	जांजगीर चांपा	15.03 करोड़	11.46 करोड़	76.25 प्रतिशत
रूपकुमारी चौधरी	महासमुंद	15.30 करोड़	11.63 करोड़	76.05 प्रतिशत
महेश कश्यप	बस्तर	14.70 करोड़	11.11 करोड़	75.62 प्रतिशत
ज्योत्सना महंत	कोरबा	15.51 करोड़	11.47 करोड़	73.96 प्रतिशत
तोखन साहू	बिलासपुर	14.70 करोड़	10.18 करोड़	69.29 प्रतिशत
चिंतामणि महाराज	सरगुजा	14.70 करोड़	10.14 करोड़	69.02 प्रतिशत
राधेश्याम राठिया	रायगढ़	15.97 करोड़	9.78 करोड़	61.26 प्रतिशत
संतोष पांडेय	राजनांदगांव	14.70 करोड़	8.62 करोड़	58.68 प्रतिशत
भोजराज नाग	कांकेर	16.46 करोड़	6.49 करोड़	39.46 प्रतिशत

झीरम कांड

फांसी की सजा के बाद भी क्यों जुटाया जा रहा 20-20 रुपये का चंदा?





स्वतंत्र बोल डेस्क

छत्तीसगढ़ की राजनीति को हिला देने वाला झीरम घाटी नरसंहार कांड में एनआईए की विशेष अदालत द्वारा 10 आरोपियों को मृत्युदंड सुनाया है। 25 मई 2013 को बस्तर के दरभा क्षेत्र की झीरम घाटी में कांग्रेस की परिवर्तन यात्रा के काफिले पर माओवादियों ने घात लगाकर हमला किया था जिसमे कांग्रेस नेताओ, पुलिसकर्मियों समेत कुल 29 लोगो की मौत हुई थी। 16 सितंबर 2026 को घटना के 13 साल बाद विशेष कोर्ट ने आरोपियों को फांसी की सजा सुनाई। एनआईए कोर्ट ने प्रमिला मोडियाम, चैतू लेकाम उर्फ मुन्ना, सुमित्रा उर्फ पुनेम मोडियाम, मुक्का मंडावी, कोसा कवासी उर्फ कोसराम, आयता मरकाम, मड़कामी देवा, जोगा मड़कामी, बंजामी सन्ना उर्फ चमरू और महादेव नाग को मौत की सजा सुनाया है। इस केस से जुड़े 28 आरोपियो को एनआईए ने फरार बताया है, जिसमे एक की मौत हो चुकी है। एनआईए जिन आरोपितों को फरार बताया उनमे माओवादी नेता टिप्पिरी तिरुपति उर्फ देवजी और बारसे देवा भी शामिल हैं। कोर्ट ने आरोपियों को अपील करने एक महीने का समय दिया है।



इन्हें मिली फांसी की सजा

20 रुपये हर घर से चंदा

एनआईए की विशेष अदालत द्वारा मामले में 10 आरोपियों को मृत्युदंड सुनाए जाने के बाद सर्व आदिवासी समाज ने इस फैसले पर सवाल सजा पाए लोगों के परिजनों और समाज के प्रतिनिधियों ने फैसले को लेकर आपत्ति जताई। उनके अनुसार कुछ ग्रामीणों को गलत तरीके से आरोपी बनाया गया है और वे घटना में शामिल नहीं थे। सर्व आदिवासी समाज एनआईए कोर्ट के फैसले को हाईकोर्ट बिलासपुर में चुनौती देगा, जिसके लिए समाज द्वारा गांव-गांव जाकर परिवारों से स्वैच्छिक सहयोग जुटाया जा रहा, हर परिवार से 20 रुपये की राशि इकट्ठा किया गया। सर्व समाज द्वारा कि जा रही पहल और 20



रुपये की राशि छोटा नजर आता है, लेकिन इसके पीछे का संदेश बड़ा है। समाज इस लड़ाई को कुछ परिवारों की निजी समस्या के रूप में नहीं देख रहा, बल्कि सामुदायिक स्तर पर कानूनी प्रक्रिया आगे बढ़ाने की कोशिश कर रहा है। यह पहल इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि यह किसी एक परिवार या संगठन तक सीमित कानूनी लड़ाई के बजाय इसे सामुदायिक स्तर पर आगे ले जाने की कोशिश के रूप में सामने आई है।

कांग्रेस का सवाल

एनआईए कोर्ट द्वारा दस आरोपियों को फांसी की सजा सुनाये जाने पर कांग्रेस पार्टी ने सवाल उठाया है। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष दीपक बैज और पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने कहा कि कोर्ट के फैसले का सम्मान



करते है पर न्याय नहीं हुआ। जिन आदिवासियों को मौत की सजा सुनाई गई वे छोटे मोटे काम करने वाले छोटे नक्सली है, बड़े नक्सलियों तक कानून के हाथ नहीं पहुंचा। पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल अपने जेब में इस घटना के सबूत होने का दावा करते थे, पर अंत तक उनकी जेब से सबूत नहीं निकला। झीरम घाटी कांड में अपने को खोने वाले कांग्रेसी नेताओं ने पीड़ितों के साथ कांग्रेस नेता राहुल गाँधी से मुलाकात किया। कांग्रेस इस लड़ाई को सुप्रीम कोर्ट में भी लड़ेगी।





सेवा का संकल्प, सुशासन का सेतु

विष्णु भैया के नेतृत्व में संवरता छत्तीसगढ़..



स्वतंत्र बोल डेस्क

छत्तीसगढ़ में बीजेपी सरकार द्वारा आम लोगो के जीवन को बेहतर करने, उनके जीवन स्तर में बदलाव लाने अनेको योजनाए बना रही है। प्रदेश के मुखिया विष्णुदेव साय द्वारा परिवार के मुखिया की तरह छत्तीसगढ़ के सवा करोड़ लोगो के हितो की चिंता की जा रही है। विष्णु सरकार में जनसेवा, सुशासन और विकास को केंद्र में रखकर मुख्यमंत्री विष्णु देव साय विभिन्न योजनाओं और अभियानों के माध्यम से लोगों तक पहुंच रही है।

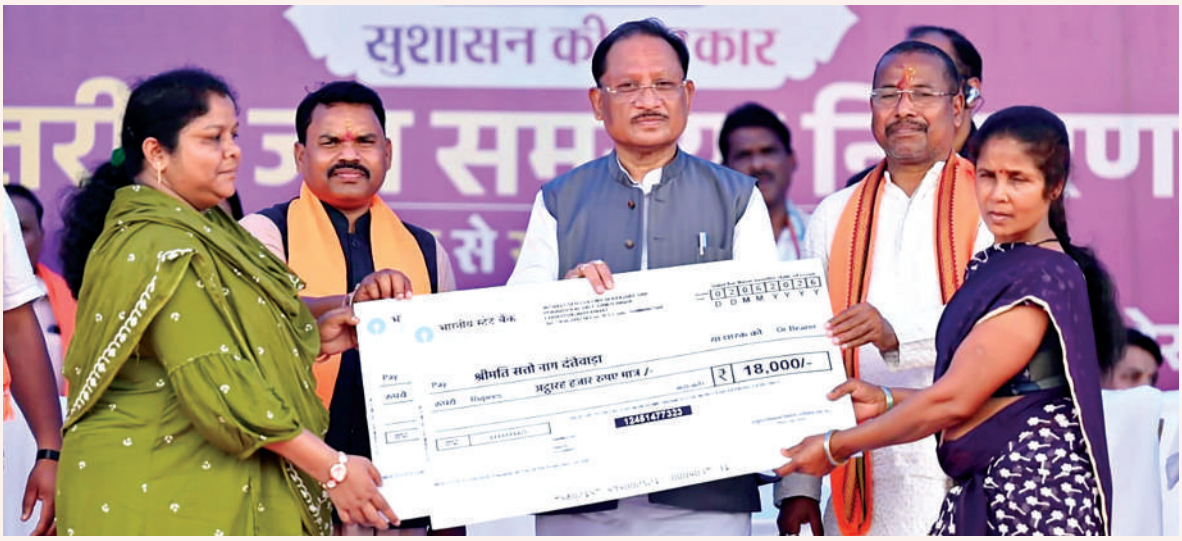
मोदी के जन्मदिन से शुरू हुआ सेवा संकल्प अभियान

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के जन्मदिन से 17 सितंबर से संकल्प सेवा अभियान की शुरुआत हुई है। आगामी 17 अक्टूबर तक चलने वाले सेवा संकल्प अभियान में प्रदेश भर में सफाई, पर्यावरण संरक्षण, स्वास्थ्य, पोषण आहार, महिला सशक्तिकरण और सामाजिक सुरक्षा जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर कार्यक्रम हो रहा है। इस अभियान का उद्देश्य विष्णुदेव साय सरकार के योजनाओं की जानकारी लोगों तक पहुंचाना और पात्र हितग्राहियों को उनसे जोड़ना है। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने अधिकारियों को अभियान में जनभागीदारी बढ़ाने और युवाओं को रोजगार के अवसरों से जोड़ने पर भी जोर दिया है। छत्तीसगढ़ में महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने और किसानों की आर्थिक स्थिति को मजबूत करना सरकार की प्रमुख प्राथमिकता है। महतारी वंदन योजना के माध्यम से पात्र महिलाओं को आर्थिक सहायता दी जा रही है। कृषि और ग्रामीण अर्थव्यवस्था से जुड़े फैसलों के जरिए किसानों तथा ग्रामीण परिवारों को लाभ पहुंचाया जा रहा है।

जनकल्याण और 'मोदी की गारंटी' को पूरा करना

मुख्यमंत्री श्री साय में सरकार में आते ही गरीबों, किसानों और महिलाओं के हित में बड़े फैसले लिए हैं। जिसमें किसानों को दो साल का बकाया धान बोनस दिया गया, जिससे ग्रामीण अर्थव्यवस्था को बड़ी ताकत मिली। राज्य की विवाहित महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने महतारी वंदन योजना अंतर्गत उन्हें प्रति माह 1,000 रुपए की वित्तीय सहायता सीधे उनके बैंक खातों में ट्रांसफर की जा रही है। राज्य के लाखों बेघर परिवारों को पक्के मकान देने के लिए प्रधानमंत्री आवास





योजना को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए लाखों मकान बनाने राशि स्वीकृत की गई।

सुशासन, पारदर्शिता और आद्योगिक विकास

प्रशासनिक व्यवस्था को आम जनता के लिए सुलभ और पारदर्शी बनाना विष्णुदेव साय के नेतृत्व की सबसे बड़ी पहचान है। सरकारी प्रक्रियाओं और भर्ती परीक्षाओं में पारदर्शिता लाने के लिए कड़े कदम उठाए गए ,ताकि युवाओं और नागरिकों का व्यवस्था पर भरोसा मजबूत हो। जनदर्शन और डिजिटल माध्यमों से मुख्यमंत्री स्वयं सीधे जनता से जुड़ रहे हैं और उनकी समस्याओं का मौके पर ही निपटारा सुनिश्चित कर रहे हैं। छत्तीसगढ़ को खनिज संपन्न राज्य से आगे बढ़ाकर एक औद्योगिक हब के रूप में विकसित किया जा रहा है। नए उद्योगों की स्थापना के लिए मंजूरी प्रक्रियाओं को सरल और डिजिटल बनाया गया है, जिससे राज्य में निवेश बढ़ रहा है। वनोपज के प्रसंस्करण और स्थानीय कुटीर उद्योगों को बढ़ावा देकर ग्रामीण क्षेत्रों में ही रोजगार के नए अवसर पैदा करने की दिशा में काम हो रहा। हाल ही में मुख्यमंत्री ने सिंगापुर यात्रा के दौरान राज्य में निवेश की संभावनाओं को अंतरराष्ट्रीय निवेशकों के सामने रखा। चर्चा में खनिज संसाधनों, तकनीक, नवीकरणीय ऊर्जा और औद्योगिक विकास जैसे क्षेत्रों पर ध्यान दिया गया। सरकार की कोशिश है कि निवेश प्रस्तावों को जमीन पर उतारकर युवाओं के लिए रोजगार के अवसर पैदा किए जाएं।

सुशासन पर जनता का भरोसा

सुशासन केवल योजनाओं की घोषणा तक सीमित नहीं है, इसका वास्तविक अर्थ है कि लोगों को समय पर सरकारी सेवाएं मिलें, शिकायतों का समाधान हो, योजनाओं में पारदर्शिता बनी रहे और विकास का लाभ प्रदेश के हर क्षेत्र तक पहुंचे। मुख्यमंत्री विष्णु देव साय



के नेतृत्व में सरकार के सामने यही महत्वपूर्ण जिम्मेदारी है कि जनसेवा के संकल्प को ठोस परिणामों में बदला जाए। सेवा का संकल्प, सुशासन का सेतु' का संदेश इसी सोच को सामने रखता है। जहां सरकार की प्राथमिकता जनता की जरूरतें हों और विकास का लक्ष्य छत्तीसगढ़ को अधिक समृद्ध, सक्षम और आत्मनिर्भर बनाना हो। सरकार की पहल का अंतिम मूल्यांकन इस बात से होगा कि आम नागरिक के जीवन में कितना सकारात्मक बदलाव आता है।



BSP में लोहा चोरी

अधिकारी, नेता, सुरक्षाकर्मी और उद्योगपति शामिल CBI जांच में खुलेगा पोल?

स्वतंत्र बोल डेस्क

देश और विदेशो में उच्च क्वॉलिटी का स्टील और लोहा सप्लाई करने वाला भिलाई स्टील प्लांट अब विवादों में आ गया है। बीएसपी जिससे निकले लोहे का उपयोग जम्मू कश्मीर के चिनाब रेलवे पुल को बनाने में हुआ था, देश में सर्वाधिक रेल पटरी यही से निकले लोहे से बनती है, वह अब लोहा चोरी को लेकर चर्चा में है। पुलिस ने दो दर्जन से अधिक लोगो को गिरफ्तार भी किया है, इस चोरी में सत्ता और विपक्ष से जुड़े बड़े रसूखदार शामिल है, ऐसे में छत्तीसगढ़ सरकार ने निष्पक्ष जाँच का जिम्मा केंद्रीय जाँच एजेंसी यानी सीबीआई को सौप दिया है।



250 टन लोहा चोरी

भिलाई स्टील प्लांट से लोहा चोरी का मामला पहली बार मई 2026 को खुला। भिलाई थाना पुलिस ने अकलोरडीह-खदानपारा स्थित ए.के. ट्रेडर्स और हथखोज क्षेत्र के गोदामों में कार्रवाई की। यहां पुलिस को करीब 250 टन लौह स्क्रैप मिला, इसमें लोहे की प्लेटें, बीम और कटिंग से निकली सामग्री शामिल थी। पुलिस ने स्क्रैप की ढुलाई और लोडिंग में इस्तेमाल होने वाले हाईवा, ट्रक, जेसीबी, हाइड्रा और दूसरी मशीनें भी जब्त कीं। जब्त सामग्री और वाहनों की कुल कीमत करीब 3.22 करोड़ रुपये आंकी गई। इसमें लगभग 90 लाख रुपये के लौह स्क्रैप की कीमत बताई गई। इस कार्रवाई के बाद पुलिस ने पता लगाना शुरू किया कि इतनी बड़ी मात्रा में लोहा कहां से आया, इसे किसने गोदाम तक पहुंचाया और इसके पीछे कौन-कौन लोग शामिल थे? जांच आगे बढ़ी तो मामला केवल एक गोदाम या कारोबारी तक सीमित नहीं रहा। प्लांट के भीतर से लेकर

बाहर माल पहुंचाने और उसे आगे बेचने तक की कड़ियां जांच के दायरे में आने लगीं।

बीजेपी विधायक ने खोला मोर्चा



बीएसपी के लोहा चोरी केस में बीजेपी से वैशाली नगर विधायक रिकेश सेन ने मोर्चा खोल दिया था। रिकेश सेन से दावा किया लोहा चोरी के केस में बड़े अधिकारी, नेता, ट्रांसपोर्टर और रसूखदार लोग शामिल है। ऐसे में मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय से मिलकर उच्च स्तरीय जाँच की मांग वे करते रहे। विधायक सेन पुलिस महानिदेशक, केंद्रीय मंत्री से मिलकर उच्च स्तरीय जाँच का निवेदन भी किया था। विधायक रिकेश सेन ने विधानसभा में यह मामला उठाया और दावा किया कि भिलाई स्टील प्लांट में लंबे समय से बड़े पैमाने पर लोहा चोरी हो रही है और इसकी केंद्रीय एजेंसी से जांच कराई जानी चाहिए। उन्होंने पिछले चार दशकों में करीब 10 हजार करोड़ रुपये के नुकसान का दावा भी किया। पुलिस ने जाँच के दौरान भाजपा के वैशाली नगर मंडल के कोषाध्यक्ष भास्कर मुदलियार को भी गिरफ्तार किया गया, पार्टी ने चोरी में संलिप्तता पाए जाने पर मुदलियार को छह साल के लिए पार्टी से निष्कासित कर दिया। इस गिरफ्तारी के बाद मामला राजनीतिक रूप से भी चर्चा में आ गया।

फ्लाई डस्ट की आड़ में बाहर निकलता था लोहा

पुलिस ने जाँच का दायरा बढ़ाया तो उसे चोरी का तरीका भी पता चला। पुलिस के मुताबिक फ्लाई डस्ट यानी प्लांट से निकलने वाली धूल जैसी सामग्री के साथ लोहा का स्क्रैप छिपाकर उसे बाहर ले जाने का तरीका अपनाया जाता था। जुलाई में गिरफ्तार किए गए एक लोडर ऑपरेटर से पूछताछ के बाद इस बारे में जानकारी सामने आई। पुलिस के अनुसार, आरोपी हिमांशु ब्रदर्स कंपनी में लोडर ऑपरेटर था, वह गिरोह के सदस्यों के कहने पर रात के समय फ्लाई डस्ट के साथ लौह स्क्रैप, कोक और कोयला लोड करता था। इसके बाद हाईवा वाहनों के जरिए सामग्री को प्लांट से बाहर भेजा जाता था। पुलिस ने इस काम में इस्तेमाल लोडर भी जब्त किया था। इस जानकारी के बाद जांच का दायरा बढ़ गया। अब सवाल सिर्फ यह नहीं था कि लोहा किस गोदाम में मिला, बल्कि यह भी था कि प्लांट के अंदर सामग्री की लोडिंग कैसे होती थी, उसे बाहर ले जाने के लिए किन वाहनों का इस्तेमाल किया जाता था और इस पूरी प्रक्रिया में किसकी क्या भूमिका थी?

बीएसपी के GM और AGM गिरफ्तार



पुलिस ने जाँच करते हुए भिलाई स्टील प्लांट के दो वरिष्ठ अधिकारियों को गिरफ्तार किया। इनमें जीएम हिमांशु भूषण मलिक और एजीएम मनोज कुमार देवांगन शामिल हैं, दोनों की गिरफ्तारी के बाद मामला और गंभीर हो गया, क्योंकि पुलिस की कार्रवाई अब प्लांट के वरिष्ठ अधिकारियों तक पहुंच चुकी थी। उस समय तक इस मामले में 15 लोगों को गिरफ्तार किया जा चुका था। पुलिस की जांच में यह पता लगाने की कोशिश की गई कि प्लांट से कथित तौर पर लौह स्क्रैप बाहर निकालने और उसे आगे पहुंचाने में किस स्तर पर मदद मिली। अधिकारियों की गिरफ्तारी के बाद लोडिंग, परिवहन और प्लांट से बाहर की आवाजाही से जुड़े सवाल भी महत्वपूर्ण हो गए।



रायपुर पावर एंड स्टील लिमिटेड के मैनेजिंग डायरेक्टर विनोद कुमार गर्ग और डायरेक्टर संदीप कुमार सिंह गिरफ्तार



वैशाली नगर मंडल के कोषाध्यक्ष भास्कर मुदलियार को भी गिरफ्तार किया गया।

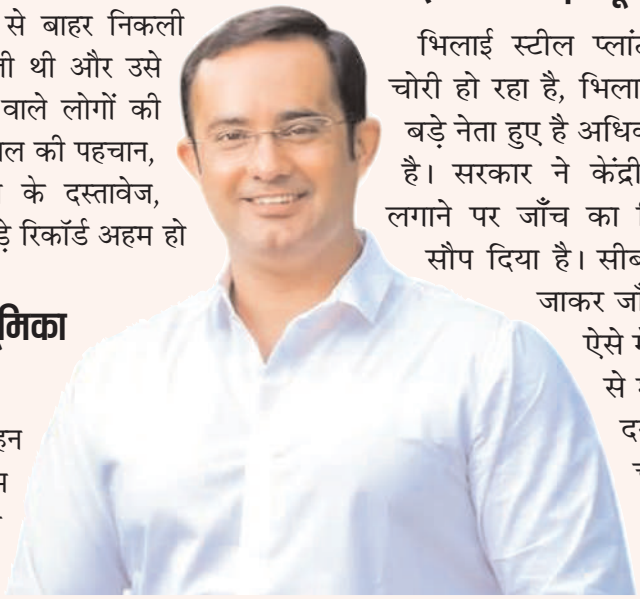
उद्योगपति गिरफ्तार

बीएसपी के लोहा चोरी को लेकर दुर्ग पुलिस पर लगातार दबाव बढ़ रहा था, ऐसे में पुलिस ने गिरफ्तार आरोपियों के निशानदेही पर सितंबर रसमड़ा स्थित रायपुर पावर एंड स्टील लिमिटेड के मैनेजिंग डायरेक्टर विनोद कुमार गर्ग और डायरेक्टर संदीप कुमार सिंह को गिरफ्तार किया गया। पुलिस के अनुसार चोरी का लोहा इस कंपनी में खपाया जाता था। दोनों ही करोड़पति बताया गया और पहली बार प्रदेश में किसी उद्योगपति को चोरी का सामान/लोहा खरीदने के आरोप में जेल भेजा गया। इन दोनों गिरफ्तारियों के बाद पुलिस ने 21 लोगो को गिरफ्तार करा चुकी है। इस घटनाक्रम ने जांच के उस हिस्से को महत्वपूर्ण बना दिया, जिसमें यह पता लगाया जाना है कि प्लांट से बाहर निकली सामग्री आखिर कहां पहुंचती थी और उसे खरीदने या इस्तेमाल करने वाले लोगों की क्या भूमिका थी। जांच में माल की पहचान, उसकी मात्रा, खरीद-बिक्री के दस्तावेज, भुगतान और परिवहन से जुड़े रिकॉर्ड अहम हो सकते हैं।

ट्रांसपोर्ट नेटवर्क की भूमिका पर भी नजर

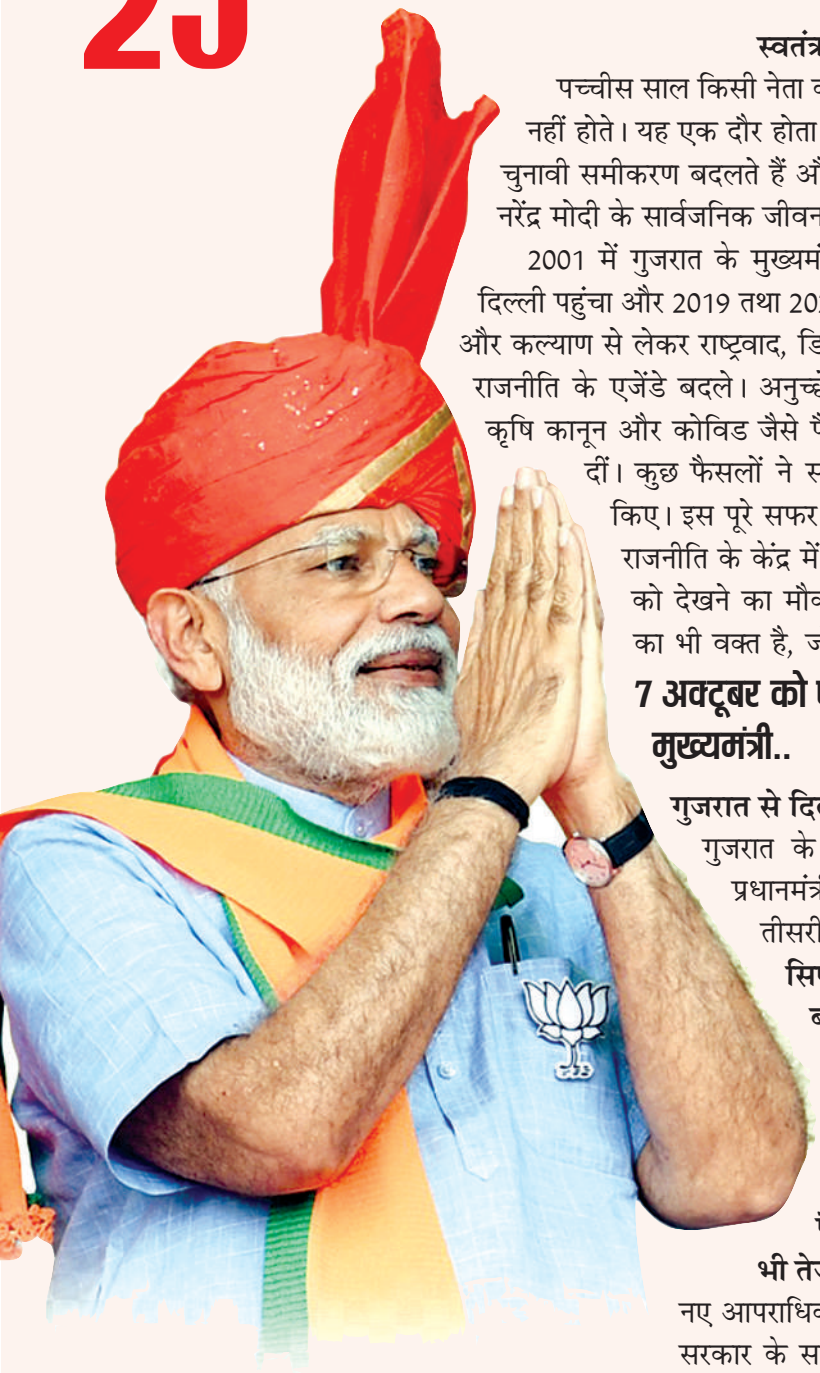
इस मामले में परिवहन व्यवस्था भी जांच का अहम हिस्सा है। प्लांट से सामग्री बाहर निकालने और उसे दूसरी जगह पहुंचाने के लिए वाहनों का इस्तेमाल किया गया। भिलाई के ट्रांसपोर्ट कारोबारी इंद्रजीत सिंह उर्फ छोटू की कंपनी हैवी ट्रांसपोर्ट कंपनी यानी HTC का नाम भी सार्वजनिक चर्चा में आया। कंपनी के पास करीब 1,500 ट्रकों का बड़ा नेटवर्क होने की बात कही गई है। छोटू की कंपनी की ट्रके बीएसपी में परिवहन का काम करती है। अगस्त को स्टेट जीएसटी की टीम ने इंद्रजीत सिंह उर्फ़ छोटू के HTC के भिलाई कार्यालय और गोदाम व बलौदाबाजार स्थित यार्ड में छापेमारी की। टीम ने दस्तावेजों और रिकॉर्ड की जांच की थी। शुरुआती जाँच में स्टेट जीएसटी ने 10 करोड़ का टैक्स चोरी होना पाया था।

सीबीआई जाँच से बड़े रसूखदार बेनकाब होंगे !



भिलाई स्टील प्लांट पर वर्षो से लोहा चोरी हो रहा है, भिलाई -दुर्ग के जितने भी बड़े नेता हुए है अधिकांश इसमें शामिल रहे है। सरकार ने केंद्रीय सम्पति को चूना लगाने पर जाँच का जिम्मा सीबीआई को सौप दिया है। सीबीआई की टीम प्लांट जाकर जाँच शुरू कर चुकी है। ऐसे में 250 टन लोहा चोरी से शुरु हुआ मामला और दस हजार करोड़ के चोरी के दावों की सच्चाई खुलने की उम्मींदे है।

25 साल जिसने मोदी के साथ सियासत को बदला



स्वतंत्र बोल डेस्क

पच्चीस साल किसी नेता की राजनीतिक यात्रा का सिर्फ एक आंकड़ा नहीं होते। यह एक दौर होता है, जिसमें सत्ता के तौर-तरीके बदलते हैं, चुनावी समीकरण बदलते हैं और राजनीति की भाषा तक बदल जाती है। नरेंद्र मोदी के सार्वजनिक जीवन के 25 साल इसी बदलाव की कहानी हैं। 2001 में गुजरात के मुख्यमंत्री के रूप में शुरू हुआ सफर 2014 में दिल्ली पहुंचा और 2019 तथा 2024 में आगे बढ़ता गया। इस दौरान विकास और कल्याण से लेकर राष्ट्रवाद, डिजिटल इंडिया और आत्मनिर्भर भारत तक राजनीति के एजेंडे बदले। अनुच्छेद 370, नोटबंदी, जीएसटी, राम मंदिर, कृषि कानून और कोविड जैसे फैसलों ने देश की राजनीति को नई बहसें दीं। कुछ फैसलों ने समर्थन जुटाया, कुछ ने तीखे सवाल खड़े किए। इस पूरे सफर में एक बात लगातार रही- मोदी भारतीय राजनीति के केंद्र में रहे। 25 साल बाद यह सिर्फ उनके सफर को देखने का मौका नहीं, बल्कि उस सियासत को समझने का भी वक्त है, जो उनके साथ बदली।

7 अक्टूबर को पहली बार बने गुजरात के मुख्यमंत्री..

गुजरात से दिल्ली तक 25 साल का सफर : 2001 में गुजरात के मुख्यमंत्री से शुरू हुई पारी 2014 में प्रधानमंत्री पद तक पहुंची और 2024 में लगातार तीसरी केंद्र सरकार के नेतृत्व तक जारी रही।

सिर्फ सत्ता नहीं, सियासत की भाषा भी बदली : विकास और कल्याण से लेकर राष्ट्रवाद, डिजिटल इंडिया, आत्मनिर्भरता और सीधे लाभ तक, मोदी दौर ने राजनीतिक एजेंडे और चुनावी विमर्श दोनों को नया आकार दिया।

फैसलों ने बदली देश की दिशा, बहस भी तेज हुई : नोटबंदी, जीएसटी, अनुच्छेद 370, नए आपराधिक कानून और कृषि कानून जैसे फैसलों ने सरकार के साथ विपक्ष और जनता के बीच भी तीखी बहस खड़ी की।

गुजरात मॉडल से मेक इन इंडिया तक, अब नजर अगली छलांग पर : मैन्युफैक्चरिंग, सेमीकंडक्टर, एआई और परमाणु ऊर्जा पर जोर के बीच भारत को वैश्विक उत्पादन और तकनीकी ताकत बनाने की बड़ी कोशिश जारी है।

25 साल - बेमिसाल..

1. **2001 – गुजरात की कमान :** 7 अक्टूबर 2001 को नरेंद्र मोदी ने गुजरात के मुख्यमंत्री पद की शपथ ली।
2. **2002 – गुजरात दंगों की छाया :** गोधरा कांड के बाद गुजरात में दंगे हुए।
3. 2003 – विकास की नई दिशा बिजली, पानी, कृषि और बुनियादी ढांचे पर जोर के साथ गुजरात में शासन और विकास का एक नया मॉडल सामने आया।
4. **2003 – वाइब्रेंट गुजरात :** निवेश आकर्षित करने के लिए वाइब्रेंट गुजरात समिट की शुरुआत हुई।
5. **2007 – तीसरी बार मुख्यमंत्री :** गुजरात विधानसभा चुनाव में भाजपा की जीत के बाद मोदी लगातार तीसरी बार मुख्यमंत्री बने।
6. **2012 – गुजरात में चौथी जीत :** विधानसभा चुनाव में भाजपा की जीत के साथ मोदी ने लगातार चौथी बार गुजरात की सत्ता संभाली।



7. **2013 – प्रधानमंत्री पद के उम्मीदवार :** भाजपा ने नरेंद्र मोदी को 2014 लोकसभा चुनाव के लिए प्रधानमंत्री पद का उम्मीदवार बनाया।
8. **2014 – दिल्ली में मोदी सरकार :** भाजपा ने लोकसभा में पूर्ण बहुमत हासिल किया।
9. **2014 – जनधन से वित्तीय पहुंच :** प्रधानमंत्री जनधन योजना ने बैंकिंग व्यवस्था से बाहर रहे लोगों को औपचारिक वित्तीय प्रणाली से जोड़ने पर जोर दिया।
10. **2014 – स्वच्छ भारत का अभियान :** 2 अक्टूबर को स्वच्छ भारत मिशन शुरू हुआ।



11. **2016 – नोटबंदी का बड़ा फैसला :** 8 नवंबर को 500 और 1,000 रुपए के पुराने नोटों को बंद करने की घोषणा हुई।
12. **2017 – जीएसटी का लागू होना :** 1 जुलाई से वस्तु एवं सेवा कर लागू हुआ।
13. **2019 – दूसरी बार मोदी सरकार :** भाजपा भाजपा ने लोकसभा चुनाव में फिर पूर्ण बहुमत हासिल किया।
14. **2019 – अनुच्छेद 370 में बदलाव :** जम्मू-कश्मीर को मिले विशेष संवैधानिक प्रावधानों में बदलाव किया।
15. **2019 – नागरिकता कानून पर बहस :** नागरिकता संशोधन कानून संसद से पारित हुआ।
16. **2020 – कोरोना और लॉकडाउन :** कोविड-19 महामारी के बीच देशव्यापी लॉकडाउन लगाया गया।
17. **2020 – कृषि कानून और आंदोलन :** तीन कृषि कानून लागू हुए।
18. **2022 – आजादी का अमृत महोत्सव :** आजादी के 75 वर्ष पूरे होने के मौके पर देशभर में अमृत महोत्सव अभियान चलाया गया।
19. **2023 – भारत की जी20 मेजबानी :** भारत ने जी20 की अध्यक्षता की।
20. **2023 नए संसद भवन में प्रवेश :** मई में नए संसद भवन का उद्घाटन हुआ।
21. **2024 – तीसरी बार प्रधानमंत्री :** लोकसभा चुनाव के बाद नरेंद्र मोदी ने लगातार तीसरी बार प्रधानमंत्री पद की शपथ ली।

वोट चोरी विवाद

ज्ञानेश कुमार के खिलाफ उबला विपक्ष, दिल्ली की सड़कों पर बवाल



स्वतंत्र बोल डेस्क

भारत में चुनाव की निष्पक्षता को लेकर एक बार फिर बड़ा राजनीतिक विवाद खड़ा हो गया है। मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार के खिलाफ विपक्षी दलों ने मोर्चा खोल दिया है। राहुल गांधी के नेतृत्व में INDIA गठबंधन के नेताओं ने मतदाता सूची में बदलाव को लेकर 'वोट चोरी' के आरोप लगाए हैं और मुख्य चुनाव आयुक्त के ज्ञानेश कुमार के इस्तीफे की मांग की है। दिल्ली में प्रदर्शन, पुलिस की कार्रवाई और चुनाव आयोग की निष्पक्षता पर उठते सवालों ने इस विवाद को और तेज कर दिया है।

विवाद की जड़ SIR

पुरे विवाद की जड चुनाव आयोग की स्पेशल इंटेंसिव रिवीजन (SIR) प्रक्रिया है। इसके तहत मतदाता सूचियों की गहन जांच और संशोधन किया जा रहा है। मीडिया रिपोर्ट (द इंडियन एक्सप्रेस) के अनुसार, 30 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में प्रारूप मतदाता सूचियों से 13 करोड़ से अधिक नाम हटाए गए। रिपोर्ट में यह भी दावा किया गया कि चुनाव आयोग के दो अन्य आयुक्तों ने पिछले 10 महीनों में आयोग के कुछ फैसलों और प्रक्रियाओं पर 14 बार औपचारिक आपत्ति दर्ज की। इन रिपोर्टों के बाद चुनाव आयोग के भीतर निर्णय लेने की प्रक्रिया और मतदाता सूची में बदलाव को लेकर सवाल उठने लगे। विपक्ष पार्टी और india गंठबंधन का कहना है कि मतदाता सूची से नाम हटने की प्रक्रिया पारदर्शी होनी चाहिए और किसी भी योग्य मतदाता को वोट देने के अधिकार से वंचित नहीं किया जाना चाहिए। कांग्रेस नेताओ के अनुसार मतदाता सूची में किए जा रहे बदलावों से सत्तारूढ़ BJP को फायदा हो रहा है, उधर चुनाव आयोग और BJP इन आरोपों को खारिज किया है।

दिल्ली में प्रदर्शन और पुलिस की कार्रवाई

मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार के इस्तीफा की मांग करते हुए दिल्ली में हंगामा हो रहा हैं। 6 अक्टूबर को राहुल गांधी, प्रियंका गांधी, समाजवादी पार्टी के





अध्यक्ष अखिलेश यादव और तृणमूल कांग्रेस समेत INDIA गठबंधन के कई नेताओं ने चुनाव आयोग के कार्यालय की ओर पैदल मार्च किया। पुलिस ने रास्ते में बैरिकेडिंग कर प्रदर्शनकारियों को रोक दिया। इसके बाद नेता धरने पर बैठ गए और मुख्य चुनाव आयुक्त से मुलाकात की मांग करने लगे। राहुल गांधी और प्रियंका गांधी समेत कई नेताओं को हिरासत में लिया गया, हालांकि बाद में उन्हें रिहा कर दिया गया। विपक्ष ने इस कार्रवाई को लोकतांत्रिक आवाज दबाने की



कोशिश बताया, जबकि पुलिस ने कानून-व्यवस्था बनाए रखने का हवाला दिया। 10 अक्टूबर को दिल्ली में विरोध प्रदर्शन को रोकने के लिए सुरक्षा और कड़ी कर दी गई। कॉकरोच जनता पार्टी से जुड़े आंदोलन के प्रदर्शनकारियों और कुछ विपक्षी नेताओं को हिरासत में लिया गया। जंतर-मंतर के आसपास सुरक्षा बल तैनात किए गए, कई इलाकों में आवाजाही प्रभावित हुई और मध्य दिल्ली के कुछ हिस्सों में मोबाइल इंटरनेट सेवाएं भी निलंबित की गईं। प्रदर्शनकारियों की मांग मुख्य चुनाव आयुक्त का इस्तीफा है।

मतदाता सूची से कितने नाम हटे और क्यों?

इस पूरे विवाद में सबसे अहम सवाल मतदाता सूची से हटाए गए नामों का है। रिपोर्टों के अनुसार, SIR प्रक्रिया के दौरान प्रारूप मतदाता सूचियों से करीब 13 करोड़ नाम हटाए गए। चुनाव आयोग के आंकड़ों के हवाले से न्यूज एजेंसी ने बताया कि इनमें लगभग 6.3 करोड़ ऐसे लोग थे, जिनके दूसरी जगह चले जाने की जानकारी थी। करीब 3 करोड़ लोगों का पता नहीं चल पाया और लगभग 2.8 करोड़ नाम मृत व्यक्तियों से संबंधित बताए गए। ये आंकड़े नाम हटाने के बताए गए कारणों को दर्शाते हैं, अपने आप में चुनावी धांधली का प्रमाण नहीं हैं। हालांकि, इतने बड़े पैमाने पर नाम हटाए जाने से यह सवाल गंभीर हो जाता है कि क्या सभी पात्र मतदाताओं को अपना पक्ष रखने और सूची में नाम दोबारा जुड़वाने का पर्याप्त अवसर मिला? इसी चिंता के बीच चुनाव आयोग ने 20 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में विशेष अभियान चलाकर उन पात्र मतदाताओं को फिर से सूची में शामिल करने का निर्देश दिया, जिनके नाम छूट गए थे। रिपोर्ट के अनुसार, पात्र मतदाताओं के नाम दोबारा दर्ज कराने के लिए फॉर्म-6 का रास्ता भी निर्धारित किया गया। चुनाव आयोग बोला- पात्र व्यक्ति अपना नाम जुड़वाँ सकता है।

शक्ति पीठ भ्रमण योजना

छत्तीसगढ़ के प्राचीन देवी मंदिर, आस्था का अद्भुत इतिहास..

स्वतंत्र बोल डेस्क

छत्तीसगढ़ की पहचान धान का कटोरा और प्राकृतिक सुंदरता के लिए जाना जाता है। यहां देवीयो के अनेको ऐसे मंदिर है जिनका अपना इतिहास और पहचान है। प्रत्येक मंदिरों की अपनी कहानी है, जहा आराधना की भी अपनी अलग परंपरा है। प्रदेश के अलग-अलग हिस्सों में ऐसे प्राचीन और प्रसिद्ध देवी मंदिर हैं, जहां नवरात्रि के नौ दिनों में श्रद्धालुओं की भीड़ उमड़ती है। कहीं माता पहाड़ की चोटी पर विराजती हैं, कहीं महानदी के किनारे तो कहीं घने जंगलों के बीच देवी का दरबार सजा है। छत्तीसगढ़ सरकार ने प्रदेश के पांच प्रमुख देवी धामों को जोड़कर छत्तीसगढ़ आस्था पथ यानी शक्तिपीठ भ्रमण विकसित करने की योजना बनाई है। इसमें डोंगरगढ़ की मां बम्लेश्वरी, रतनपुर की मां महामाया, दंतेवाड़ा की मां दंतेश्वरी, चंद्रपुर की मां चंद्रहासिनी और कुदरगढ़ की मां कुदरगढ़ी मंदिर को शामिल किया गया है।



डोंगरगढ़ की मां बम्लेश्वरी- पहाड़ पर माता का दरबार

राजनांदगांव जिले के डोंगरगढ़ में मां बम्लेश्वरी का प्रसिद्ध मंदिर करीब 1600 फीट ऊंची पहाड़ी पर स्थित है। मंदिर तक पहुंचने के लिए श्रद्धालु सीढ़ियों से पहाड़ी चढ़ते हैं, पहाड़ी के नीचे छोटी बम्लेश्वरी देवी का भी मंदिर है। दोनों मंदिर नवरात्रि में श्रद्धालुओं के प्रमुख आस्था केंद्र बन जाते हैं। नवरात्रि के दौरान यहां बड़ी संख्या में श्रद्धालु पहुंचते हैं। मंदिर ट्रस्ट की ओर से नवरात्रि में ज्योति कलश प्रज्ज्वलित किए जाते हैं। पहाड़ी पर जाने के लिए रोपवे की सुविधा भी उपलब्ध है। डोंगरगढ़ की खासियत यह है कि यहां माता के दर्शन के साथ पहाड़ी की यात्रा भी श्रद्धालुओं के लिए धार्मिक अनुभव का हिस्सा बन जाती है। डोंगरगढ़ नाम को दो शब्दों से मिलकर बना है- 'डोंगर' यानी पहाड़ और 'गढ़' यानी किला। पहाड़ियों और तालाबों से घिरा यह क्षेत्र लंबे समय से धार्मिक और प्राकृतिक पर्यटन का प्रमुख केंद्र रहा है।

मंदिर की उत्पत्ति से जुड़ी एक प्रचलित लोककथा के अनुसार, लगभग 2,200 साल पहले राजा वीरसेन थे, जिनकी कोई संतान नहीं था । उन्होंने राजपुरोहितों की सलाह पर देवी-देवताओं की पूजा की, मान्यता है कि इसके बाद उनके घर पुत्र का जन्म हुआ, जिसका नाम मदनसेन रखा गया। राजा वीरसेन ने इसे भगवान शिव और माता पार्वती का आशीर्वाद माना और मंदिर का निर्माण कराया। यह कहानी धार्मिक परंपरा में प्रचलित है, इसकी पुष्टि करने वाला ठोस प्रमाण स्पष्ट नहीं हैं।

रतनपुर की मां महामाया, जहां नवरात्रि में जगमगाते हैं हजारों ज्योति कलश

बिलासपुर जिले का रतनपुर मां महामाया की नगरी के रूप में प्रसिद्ध है। मां महामाया का मंदिर करीब एक हजार साल से भी ज्यादा पुरानी आस्था और इतिहास का केंद्र है। नवरात्रि में यहां हजारों मनोकामना ज्योति कलश प्रज्वलित किए जाते हैं। इस मंदिर का इतिहास कलचुरी राजवंश, राजा रत्नदेव प्रथम और मां आदिशक्ति से जुड़ी एक कहानी चर्चित है। मंदिर में

महामाया के साथ महाकाली, महासरस्वती और महालक्ष्मी के स्वरूप भी विराजमान हैं। नवरात्रि के दौरान मंदिर परिसर में बड़ी संख्या में मनोकामना ज्योति कलश प्रज्ज्वलित किए जाते हैं। नौ दिनों तक रतनपुर का वातावरण देवी भक्ति से सराबोर रहता है। प्रदेश के अलग-अलग हिस्सों से श्रद्धालु यहां माता के दर्शन के लिए पहुंचते हैं।



मंदिर के संबंध में बताया जाता है कि वर्ष 1045 ईस्वी के आसपास कलचुरी वंश के राजा रत्नदेव प्रथम शिकार के लिए मणिपुर नामक गांव पहुंचे थे। रात में एक वटवृक्ष के नीचे विश्राम करते समय उन्होंने अलौकिक प्रकाश देखा। मान्यता है कि उस प्रकाश में उन्हें मां आदिशक्ति महामाया के दर्शन हुए। इस घटना के बाद राजा ने अपनी राजधानी तुम्माण से रतनपुर स्थानांतरित करने का निर्णय लिया। प्रचलित विवरण के अनुसार, वर्ष 1050 ईस्वी में यहां मां महामाया का भव्य मंदिर बनवाया गया। मंदिर के गर्भगृह में देवी की दो प्रतिमाएं हैं, आगे की प्रतिमा को महिषासुर मर्दिनी और पीछे की प्रतिमा को देवी सरस्वती का स्वरूप माना जाता है। मंदिर परिसर में महाकाली, भैरव, भगवान शिव, हनुमान और अन्य देवी-देवताओं की प्रतिमाएं भी हैं।

दंतेवाड़ा की मां दंतेश्वरी

बस्तर की आराध्य देवी बस्तर के दंतेवाड़ा में मां दंतेश्वरी का मंदिर प्रदेश के सबसे महत्वपूर्ण देवी धामों में शामिल है। शंखिनी और डंकिनी नदियों के संगम क्षेत्र में स्थित यह मंदिर बस्तर की धार्मिक और सांस्कृतिक परंपरा का प्रमुख केंद्र है। मां दंतेश्वरी बस्तर की आराध्य देवी हैं। नवरात्रि में यहां विशेष पूजा और ज्योति कलश की परंपरा होती है। दंतेवाड़ा की खासियत सिर्फ मंदिर तक सीमित नहीं है, यहां देवी आराधना बस्तर की आदिवासी परंपराओं और संस्कृति से गहराई से जुड़ी हुई है। यही वजह है कि मां दंतेश्वरी की आराधना बस्तर के सबसे बड़े सांस्कृतिक पर्व बस्तर दशहरा का भी प्रमुख हिस्सा है। मंदिर का इतिहास लगभग 11वीं-12वीं शताब्दी तक जाता है और बाद में 14वीं शताब्दी में इसका पुनर्निर्माण कराया गया। धार्मिक मान्यता के अनुसार, जब माता सती ने अपने पिता दक्ष के यज्ञ में देह त्याग दी, तब भगवान शिव उनके शरीर को लेकर विचरण करने लगे। मान्यता है कि भगवान विष्णु के सुदर्शन चक्र से सती के शरीर के अंग अलग-अलग स्थानों पर गिरे और वहां शक्तिपीठ स्थापित हुए।

दंतेवाड़ा के बारे में मान्यता है कि यहां माता सती का दांत गिरा था, इसी कारण देवी का नाम दंतेश्वरी पड़ा और नगर का नाम दंतेवाड़ा पड़ा। इसे 52 शक्तिपीठों में से एक भी माना जाता है। मंदिर की मुख्य प्रतिमा काले पत्थर से बनी छह भुजाओं वाली महिषासुरमर्दिनी देवी की है। मंदिर की वास्तुकला में दक्षिण भारतीय शैली का प्रभाव भी दिखाई देता है।



चंद्रपुर की मां चंद्रहासिनी

महानदी के तट पर आस्था का धाम जांजगीर-चांपा जिले के चंद्रपुर में महानदी के तट पर मां चंद्रहासिनी देवी का मंदिर स्थित है। नदी के किनारे बना यह मंदिर धार्मिक आस्था के साथ पर्यटन का भी प्रमुख केंद्र है। महानदी का किनारा, मंदिर परिसर और नवरात्रि का माहौल चंद्रपुर को

देवी दर्शन के साथ धार्मिक पर्यटन के लिए भी खास बनाता है। मंदिर से जुड़ी प्रचलित लोककथा के अनुसार, माता चंद्रसेनी सरगुजा क्षेत्र से उदयपुर और रायगढ़ होते हुए महानदी के तट पर चंद्रपुर पहुंचीं। नदी के शांत वातावरण से प्रभावित होकर माता यहां विश्राम करने लगीं। मंदिर निर्माण के बारे में चर्चित कथाओ अनुसार संबलपुर के राजा चंद्रहास को देवी ने स्वप्न में दर्शन देकर मंदिर बनवाने तथा प्रतिमा स्थापित करने का निर्देश दिया। इसके बाद यहां पूजा शुरू होने की मान्यता है। माता के मुखमंडल की चंद्रमा जैसी आकृति के कारण उन्हें चंद्रहासिनी और चंद्रसेनी नामों से जाना जाता है। नवरात्रि के समय यहां भव्य मेला लगता है और छत्तीसगढ़ के अलावा दूसरे राज्यों से भी श्रद्धालु पहुंचते हैं। मंदिर डभरा तहसील मुख्यालय से करीब 22 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है।



कुदरगढ़ की माता- जंगल और पहाड़ियों के बीच आस्था

सरगुजा संभाग के सूरजपुर जिले में स्थित कुदरगढ़ देवी मंदिर भी छत्तीसगढ़ के प्रमुख देवी धामों में शामिल है। घने वन क्षेत्र और पहाड़ी वातावरण के बीच स्थित यह मंदिर लंबे समय से श्रद्धालुओं की आस्था का केंद्र है। कुदरगढ़ धाम का प्राचीन मंदिर 17वीं शताब्दी से जुड़ा माना जाता है। इसका संबंध खैरवार राजा बालंद और पहाड़ी क्षेत्र की ऐतिहासिक परंपराओं से बताया गया है। स्थानीय मान्यताओं के अनुसार, मां कुदरगढ़ी की मूर्ति का संबंध राजा बालंद शाह के शासनकाल से जोड़ा जाता है। एक प्रचलित कथा कहती है कि बाद में माता की मूर्ति घने जंगल में रह गई थी। फिर चौहान राजपरिवार को स्वप्न में देवी के स्थान का संकेत मिला और मूर्ति की पूजा दोबारा शुरू हुई। इस कथा के अलग-अलग जानकारी चर्चित हैं। मां कुदरगढ़ी को बाघ पर सवार देवी के स्वरूप में पूजा जाता है, इसी वजह से उन्हें मां बागेश्वरी भी कहा जाता है। भक्तों की मान्यता है कि माता के दर्शन और पूजा से मनोकामनाएं पूरी होती हैं। श्रद्धालु अपनी मन्नत के प्रतीक के रूप में पेड़ों पर चुनरी बांधते हैं। मंदिर सूरजपुर जिला मुख्यालय से लगभग 40-45 किलोमीटर दूर ओड़गी क्षेत्र की पहाड़ी पर स्थित है। मंदिर तक पहुंचने के लिए सैकड़ों सीढ़ियां चढ़नी पड़ती हैं। आसपास 15-20 छोटी गुफाएं, एक बड़ी गुफा और कपिल धारा जलप्रपात जैसे प्राकृतिक आकर्षण हैं। कुदरगढ़ को भी राज्य सरकार द्वारा प्रस्तावित शक्तिपीठ भ्रमण योजना में शामिल किया गया है। इसका मतलब है कि प्रदेश के उत्तर से दक्षिण तक स्थित प्रमुख देवी स्थलों को एक धार्मिक यात्रा मार्ग के रूप में विकसित करने की दिशा में काम किया जा रहा है।



पांच धाम, पांच अलग रंग और एक ही आस्था छत्तीसगढ़ के इन पांच देवी धामों की खासियत यह है कि हर मंदिर का अपना अलग भौगोलिक और सांस्कृतिक स्वरूप है। डोंगरगढ़ में पहाड़ पर मां बम्लेश्वरी का दरबार है, रतनपुर में ऐतिहासिक मां महामाया का मंदिर है, दंतेवाड़ा में बस्तर की आराध्य मां दंतेश्वरी विराजती हैं, चंद्रपुर में महानदी के तट पर मां चंद्रहासिनी का धाम है और कुदरगढ़ में जंगल-पहाड़ के बीच माता का मंदिर है। नवरात्रि में इन मंदिरों में पूजा, ज्योति कलश, मेले और धार्मिक आयोजनों के साथ पूरे प्रदेश का वातावरण देवी भक्ति से भर जाता है।

एशियन गेम्स में भारत का शानदार प्रदर्शन जीते 21 स्वर्ण पदक..

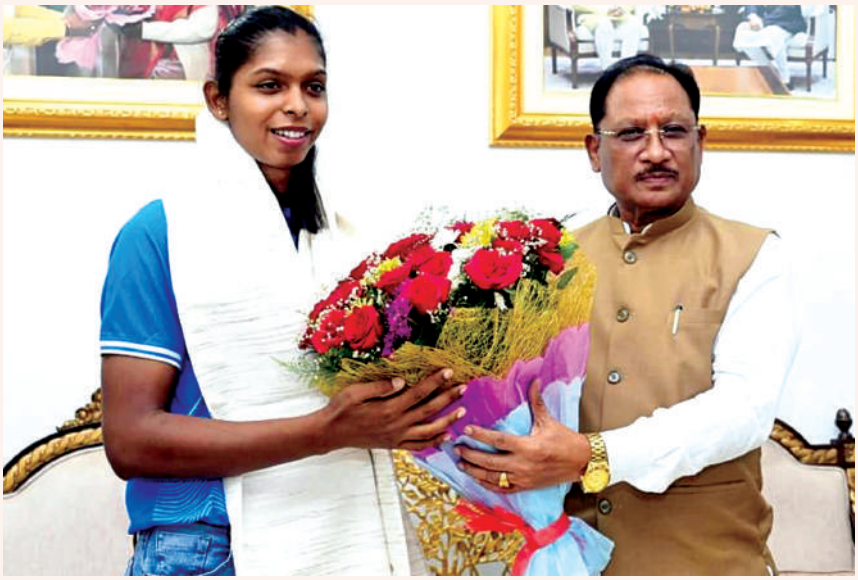


स्वतंत्र बोल डेस्क

जापान में आयोजित एशियन गेम्स 2026 भारत के लिए शानदार रहा। भारतीय खिलाड़ियों ने शानदार प्रदर्शन करते हुए देश के लिए कुल 85 पदक जीतकर पदक तालिका में चौथा स्थान हासिल किया। 19 सितंबर से 4 अक्टूबर 2026 तक चलके खेल महोत्सव में भारतीय खिलाड़ियों ने तिरंगा का मान बढ़ाया और रिकॉर्ड 21 स्वर्ण पदक, 27 रजत पदक और 37 कांस्य पदक जीते। भारत ने तीरंदाजी, निशानेबाजी,मुक्केबाजी, कुश्ती, क्रिकेट, हॉकी, कबड्डी, एथलेटिक्स, गोल्फ में स्वर्ण पदक जीता।

छत्तीसगढ़ की संजू ने रचा कीर्तिमान

भारत की स्वर्णिम सफलता में छत्तीसगढ़ की संजू देवी का नाम भी जुड़ा है, संजू देवी ने भारतीय महिला कबड्डी टीम का हिस्सा बनकर पहले ही देश को स्वर्ण दिला चुकी हैं। इसके बाद भारत ने एक के बाद एक कई खेलों में स्वर्ण पदक अपने नाम किए हैं। संजू देवी कोरबा जिले के केराकछार गांव की रहने वाली हैं। भारतीय महिला कबड्डी टीम ने फाइनल में ईरान को 37-34 से हराकर स्वर्ण पदक जीता। इस मुकाबले में संजू देवी ने अहम भूमिका निभाई और निर्णायक मौकों पर टीम के लिए अंक जुटाए। कोरबा के छोटे से गांव से निकलकर भारतीय महिला कबड्डी टीम तक पहुंची संजू ने एशियाई खेलों में स्वर्ण पदक जीतकर प्रदेश का नाम अंतरराष्ट्रीय खेल मंच पर पहुंचाया। संजू की सफलता इसलिए भी खास है क्योंकि वह ऐसे परिवार से आती हैं जहां खेल को करियर बनाने का रास्ता आसान नहीं था। उनके प्रदर्शन के बाद मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने उनसे फोन पर बात कर बधाई दी। राज्य सरकार की



ओलंपिक के लिए सीधे प्रवेश भी हासिल किया। महिला रिकर्व तीरंदाजी में अंकिता भकत, कीर्ति शर्मा और कुमकुम मोहोड़ की टीम ने दक्षिण कोरिया को हराकर भारत के लिए इस स्पर्धा का पहला एशियाई खेल स्वर्ण जीता। मुक्केबाजी में लवलीना बोरगोहेन, परवीन हुड्डा और अंकुश पंघाल ने स्वर्ण पदक जीते। कुश्ती में सुजीत कलकल ने 65 किलोग्राम फ्रीस्टाइल वर्ग में स्वर्ण अपने नाम किया।

ओर से उन्हें 51 लाख रुपए सम्मान राशि देने की घोषणा भी की गई।

एक दिन में छह स्वर्ण पदक

भारत के लिए 2 अक्टूबर का दिन बेहद खास रहा। भारतीय खिलाड़ियों ने एक ही दिन छह स्वर्ण पदक जीते। इनमें महिला हॉकी, महिला रिकर्व तीरंदाजी टीम, मुक्केबाजी में लवलीना बोरगोहेन, परवीन हुड्डा और अंकुश पंघाल तथा कुश्ती में सुजीत कलकल के स्वर्ण शामिल रहे। भारतीय महिला हॉकी टीम ने चीन को 1-0 से हराकर स्वर्ण पदक जीता। इसके साथ ही महिला हॉकी टीम ने एशियाई खेलों में स्वर्ण पदक का 44 साल का इंतजार खत्म किया और 2028 लॉस एंजिलिस



स्वर्ण पदको की झड़ी

भारत ने महिला व्यक्तिगत रिकर्व तीरंदाजी में कुमकुम मोहोड़ के रूप में एक और स्वर्ण जीता, इसके बाद महिला गोल्फ में प्रणवी उर्स ने व्यक्तिगत स्पर्धा का स्वर्ण पदक अपने नाम किया। प्रणवी उर्स एशियाई खेलों में महिला व्यक्तिगत गोल्फ का स्वर्ण जीतने वाली पहली भारतीय महिला बनीं। इसके बाद भारतीय पुरुष क्रिकेट टीम ने पाकिस्तान को 19 रन से हराकर स्वर्ण पदक जीत लिया। भारत ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 20 ओवर में 211 रन बनाए, जिसके जवाब में पाकिस्तान की टीम 192 रन तक पहुंच सकी। भारत की पदक तालिका में लगातार बढ़त एशियाई खेलों के अंतिम चरण में भारत की पदक संख्या तेजी से बढ़ी है।



यादों में नाना पाटेकर..

स्वतंत्र बोल डेस्क

नाना पाटेकर चले गए... यह कहते हुए भी भीतर का कोई सच कहता है कि नहीं, बात अभी पूरी नहीं हुई है। कुछ लोग ऐसे होते हैं, जो जब जाते हैं, तो पीछे छोड़ जाते हैं हवा में अपनी आवाज का भारीपन, एक खास तरह का गुस्सा, जो कभी किसी अन्याय के खिलाफ उबला था और वह अचानक फूट पड़ने वाली हंसी, जो किसी बच्चे की निश्छलता जैसी साफ थी। वह अभिनेता थे, बहुत बड़े अभिनेता। लेकिन शायद इससे भी पहले वह एक आदमी थे। मायानगरी ने उन्हें पहचान दी। फिल्मों ने उन्हें लाखों लोगों तक पहुंचाया। 'अंकुश', 'प्रहार', 'परिंदा', 'क्रांतिवीर', 'अब तक छप्पन', 'नटसम्राट', 'कोहराम', 'तिरंगा', 'वेलकम' जैसी ढेर सारी फिल्मों में दिखाई देने वाले चेहरे अलग-अलग थे, लेकिन उनके भीतर का आदमी कहीं न कहीं एक ही था। वह आदमी, जो अन्याय देखकर चुप नहीं रह सकता था। उन्हें हमेशा ऐसे दरवाजे की तरह देखा, जो कभी पूरी तरह बंद नहीं होता और जब खुलता है तो एक झटके के साथ खुलता है। उनकी आवाज में मराठा माटी की वह सोंधी और तीखी गंध थी, जो जब बोलती थी, तो मुंबई की बड़ी-बड़ी इमारतों के बीच एक खाली सड़क की याद दिलाती थी। उनके चेहरे पर एक ही समय में दो मौसम रहते थे- एक तपती हुई धूप, जहां अन्याय का गुस्सा पकता था और दूसरी अचानक बरस जाने वाली बारिश, जो किसी अबोध बच्चे की हंसी की तरह निर्मल थी।



सिनेमा ने रंगों के रास्ते बुलाया, अभिनय के रंग जोड़े

जनवरी 2006 में उनसे हुई छोटी-सी मुलाकात अब बहुत दूर की चीज लगती है। फिल्म 'अपहरण' रिलीज हो चुकी थी। नाना सामने थे, लेकिन उन्हें अभिनेता की तरह नहीं देख पा रहे थे। उस समय वह सर जेजे इंस्टीट्यूट ऑफ एप्लाइड आर्ट' के पुराने विद्यार्थी थे। ऐसा आदमी, जिसने कभी रंगों के सामने बैठकर दुनिया को देखा होगा। वे चित्रकार पहले थे, अभिनेता बाद में।

- निवेदन -

स्वतंत्र बोल से संबंधित कोई भी सुझाव या शिकायत हो तो आप नीचे लिखे पते पर भेज सकते हैं। फोन और ई-मेल पर भी जानकारी दे सकते हैं। इसके अलावा आपके क्षेत्र से घटित कोई घटना, समाचार, या अन्य कोई गतिविधि जो पत्रिका में प्रकाशन योग्य हो.. तो उसे भी भेज सकते हैं।

छत्तीसगढ़ का सबसे विश्वसनीय हिन्दी मासिक पत्रिका
तेजी से बढ़ता यूट्यूब चैनल और न्यूज वेबसाइट को निर्भीक और
जनपक्षीय पत्रकारिता के लिये आर्थिक रूप से सहयोग करें।

बंधन बैंक
बैंक खाता नंबर - 20100031810292
आईएफएससी कोड - BDBL0001958

SB स्वतंत्र बोल



संपादक स्वतंत्र बोल
डी-317 बैंक ऑफ बड़ौदा के सामने टैगोर नगर, रायपुर (छ.ग.)
97543-74333, bolswatantra@gmail.com
swatantrabol swatantrabol www.swatantrabol.com हिन्दी मासिक पत्रिका

सेवा के 25 वर्ष
सुशासन | गरीब कल्याण | राष्ट्र निर्माण

सेवा सेतु

जनता के द्वार, डिजिटल सरकार

दफ्तरों के चक्कर खत्म



अधिक जानकारी हेतु
▸ स्कैन करें
या विजिट करें

sewasetu.cgstate.gov.in

92034 06400



RO. No. 14106/56